www.thearyasamaj.org

Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

18th November 2016

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में व आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना के सौजन्य से

हैदराबाद में

राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं विद्वत् प्रतिनिधि सम्मेलन

2 फरवरी से 5 फरवरी 2017 तक

2 फरवरी 2017 को उद्घाटन समारोह व 5 को समापन

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार-विमर्श करने तथा भावी दिशा निर्धारित करने के लिए **सार्वदेशिक आर्य प्रतिधिधि सभा के तत्वावधान में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना** के सौजन्य से आगामी **२ से ५ फरवरी, २०१७ की तिथियों में तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में राष्ट्रीय स्तर का बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन आयोजित** किया जा रहा है।

यह सम्मेलन आर्य समाज की तथा देश की वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित किए जाने का निर्णय लिया गया है। वर्तमान सन्दर्भों में देश और दुनिया, अनेक प्रकार के समस्याओं से झूज रही है जिसमें आतंकवाद और हिंसा जैसे मुद्दे हैं तो दूसरी ओर लगातार बड़ रही भौतिकवादी व भोगवादी संस्कृति,मांसाहार तथा शराब के प्रचलन को बढावा दे रही है। राजनीति ने एक ओर जातीवाद को मज़बूत किया है तो दूसरी ओर अंध विश्वास को बढावा दे रही है। आर्थिक तन्त्र मिडिया को, विशेषकर एलॉट्रानिक मिडिया को, अंध विश्वासों को बढाने में भरपूर उपयोग कर रहा है। भारत में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोग मौलिक मूल्यों की अबहेलना कर भौतिकवादि - भोगवादि मूल्यों की अवधारणाओं को बढावा दे रहे है और इसमें मिडिया अहं भूमिका निभा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में आर्य समाज और आर्य समाज से बाहर के प्रबुद्धजन यह अनुभव कर रहे है कि आर्य समाज की बहुत आवश्यकता होते हुए भी इसकी प्रासंगिकता क्यों नहीं बन पा रही है। हर संदर्भ में क्यों ? शब्द पर बड़ी गंभीरता से विचार मंथन करने की आवश्यकता को आर्य समाज के प्रबुद्ध जन महसूस कर रहे है। यह भी महसूस कर रहे है कि आर्य समाज के संगठन को मज़बूत करने के साथ-साथ निर्दिष्ट नीति तथा दिशा देने वाला संगठन के रूप में उभरना चाहिए। यह इसलिए भी महसूस किया जा रहा है कि राष्ट्र के स्वाधिनता आंदोलन में तथा सुधारवादी राष्ट्रीय आंदोलन में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है तथा अनेकों ने , अपने आपको राष्ट्र के लिए शहीद कर दिया। निष्ठावान व कर्तव्य परायण

www.thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग

सभा ने महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक निर्णय लिए

भारत देश के समस्त प्रान्तों में प्रतिनिधि सभाओं के विवादों को

समाप्त करने के लिए 2001 को आधार मानकर

सारे प्रांतों में प्रांतीय सभाओं के चुनाव सम्पन्न करवाने का प्रस्ताव पारित

राष्ट्रीय स्तर पर हैदराबाद में राष्ट्रीय

बुद्धिजीवी एवं विद्वत् प्रतिनिधि सम्मेलन

2 फरवरी से 5 फरवरी 2017 तक

2 फरवरी 2017 को उद्घाटन समारोह व 5 को समापन

धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर के मुद्दों पर विचार मंथन राष्ट्रीय क्षितिज पर आर्य समाज को खड़ा किए जाने का संकल्प

महानुभावों की एक लंबी सूची रही है जिन्होंने सर्वम् वै पूर्णं कर दिया। आज आर्य समाज में अनेकों महानुभाव अपने- अपने ढंग से परम्परागत कार्य कर रहे हैं। उसकी उपयोगिता होते हुए भी आर्य समाज की प्रासंगिकता क्यों नही वन पारही है। अतः आज के संदर्भ में आर्य समाज की प्रासंगिकता को बनाने के लिए यह सम्मेलन अत्यन्त सार्मायिक एवं महत्वपूर्ण है।

सम्मेलन में आर्य समाज के वरिष्ठ विद्वान् सन्यासियों, वैदिक विद्वानों, वरिष्ठ उपदेशकों, गुरुकुलों के वरिष्ठ आचार्यों, वरिष्ठ भजनोपदेशकों, वरिष्ठ आर्य बुद्धिजीवियों तथ वरिष्ठ आर्यनेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है। आप आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हैं अतः आप इस सम्मेलन में अवश्य पधारकर अपनी गरिमर्या उपस्थिति से सम्मेलन की सफलता में अपना योगदान प्रदान करें। सम्मेलन का विस्तृत कार्यक्रम एवं विचारणीय विषय सूचीबद्ध करके आपकी सेवा में शीघ्र भेजे जावेंगे।

(प्रो. विट्ठल राव आर्य)
महा मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली व
प्रधान, आ.प्र.सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना मो. : ०९८४९१ ६०६९९

(स्वामी आर्यवेश)
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली
मो. : ९०१३७८३१०१

ओ३म्

'ऋषि दयानन्द के जीवन के अन्तिम प्रेरक शिक्षाप्रद क्षण'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द की मृत्यु जोधपुर में वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए उनके विरोधियों के षडयन्त्र के अन्तर्गत उन्हें संखिया जैसे विषैले पदार्थ का सेवन कराने से अजमेर में दीपावली 30 अक्तूबर, 1883 मंगलवार सायं लगभग 6:00 बजे हुई थी। मृत्यु के दिन मृत्यु से आधे घण्टे पूर्व की उनकी जीवन की प्रमुख घटनाओं का विवरण हम उनके प्रमुख प्रथम जीवनीकार पं. लेखराम जी के शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं।

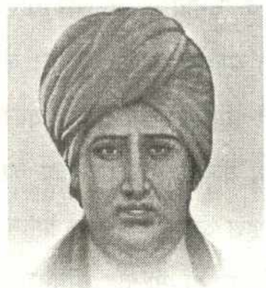

'अन्तिम दृश्य तथा विदाई' शीर्षक से पं. लेखराम जी ने लिखा है कि 'साढ़े पांच बजे का समय आया तो हम लोगों से स्वामी जी ने कहा कि अब सब आर्यजनों को जो हमारे साथ और दूर–दूर देशों से आये हैं, बुला लो और हमारे पीछे खड़ा कर दो, कोई सम्मुख खड़ा न हो। बस आज्ञा मिलनी थी कि यही किया गया। जब सब लोग स्वामी जी के पास आ गये तब श्रीयुत ने कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और ऊपर की छत के दो छोटे द्वार भी खुलवा दिये। उस समय पांडे रामलाल जी भी आ गये। फिर स्वामी जी ने पूछा कि कौन सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है। **किसी ने उत्तर दिया कि कृष्णपक्ष का अन्त और शुक्लपक्ष का आदि अमावस, मंगलवार है।** यह सुनकर (स्वामी दयानन्द जी ने) कोठे की छत और दीवारों की ओर दृष्टि की, फिर **प्रथम वेदमन्त्र पढ़े, तत्पश्चात संस्कृत में कुछ ईश्वर की उपासना की। फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा–सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे और गायत्री मन्त्र के पाठ के पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त सहित कुछ समय तक समाधियुक्त रह नयन खोल यों कहने लगे कि 'हे दयामय, हे सर्वशक्मिान् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, आहा ! तैने अच्छी लीला की।'** बस इतना कह **स्वामी जी महाराज ने जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोक एक साथ ही बाहर निकाल दिया।** ('भारतमित्र' से)

'अहा' शब्द पर टिप्पणी करते हुए पं. लेखराम कृत ऋषि जीवन की सामग्री व लेखों को व्यस्थित रुप देकर उसका सम्पादन करने वाले पं. आत्मा राम जी ने टिप्पणी करते हुए लिखा है कि यह ''अहा'' शब्द उन्होंने ऐसा कहा था जैसे कि कोई व्यक्ति कई वर्षों से बिछड़े हुए अपने प्यारे मित्र को मिलने पर प्रसन्नता प्रकट करता है और उस समय की दशा उस की प्रसन्नता की दशा थी और यही कारण है कि उन की इस विचित्र प्रसन्नता की दशा ने महान् विद्वान् पंडित गुरुदत्त की ईश्वरसत्ता का अत्यन्त ही प्रबल प्रत्यक्ष प्रमाण बिन बोले दे दिया। विदित रहे कि उस समय पंडित गुरुदत्त जी एम.ए. चुपचाप खड़े हुए दत्तचित्त होकर उस दशा का अध्ययन कर रहे थे और योगसिद्धि का फल देख रहे थे।

मृत्यु के दिन महाराज ने क्षौर कराया था। उनकी इच्छा स्नान करने की थी, परन्तु लोगों ने स्नान न करने दिया, तब उन्होंने भीगे कपड़े से सिर पोंछा। उस रोज महाराज ने यह भी कहा था कि जो इच्छा हो वही भोजन बनाओ। जब भोजन बन गया तो उसे एक थाल में सजाकर महाराज के सामने लाया गया। महाराज ने उसे एक दृष्टि से देखकर कहा कि ले जाओ, परन्तु लोगों ने आग्रह किया कि आप भी कुछ खाइए, इस पर उन्होंने चनों के पानी की एक चमची ली। **(पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित जीवनचरित)**

मास्टर लक्ष्मण जी आर्योपदेशक रचित जीवन चरित में जीवनीकार ने यह भी लिखा है कि '(मृत्यु होने के पश्चात) कुछ लोग चाहते थे कि (स्वामी जी के शव को) चारपाई से उतारा जाये, परन्तु बहुसम्मति से ऐसा नहीं किया गया। **स्वामी जी की आंखें प्राण त्यागते समय खुली रह गई थीं। लाला जीवनदास जी ने बन्द कीं, परन्तु पूरी बन्द न हो सकीं।'**

स्वामी जी के प्राण छोड़ने से पूर्व कुछ समय तक समाधियुक्त रहने का उल्लेख हुआ है। इसमें यह नहीं लिखा है कि स्वामी की यह समाधि की अवस्था बैठे हुए लगी थी या लेटे हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि यह समाधि लेटे हुए ही लगी थी। इसका कारण स्वामी जी रूग्ण व दुर्बल होना है। स्वामी जी के एक अन्य जीवनीकार स्वामी सत्यानन्द (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के लेखक, प्रकाशन सन् 1919) ने मृत्यु के समय का उल्लेख करते हुए लिखा है कि **'और चिरकाल तक सुवर्णमयी मूर्ति की भांति निश्चल रूप से समाधिस्थ बैठे रहे।'** हमें लगता है कि पूर्व जीवनीकारों द्वारा समाधिस्थ शब्द के प्रयोग को देखकर उन्होंने अनुमान किया कि समाधिस्थ अवस्था बैठी अवस्था में रही होगी। आर्यविद्वान इस पर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। दीवान बहादुर हरबिलास शारदा जी ने भी ऋषि दयानन्द जी की जीवनी में लेटे हुए ही अपने प्राण छोड़ने का उल्लेख किया है।

स्वामी दयानन्द जी का जीवन आदर्श मनुष्य, महापुरुष व महात्मा का जीवन था। उन्होने अपने पुरुषार्थ से ऋषित्व प्राप्त किया और अपने अनुयायियों के ऋषित्व प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। एक ऋषि का जीवन कैसा होता है और ऋषि की मृत्यु किस प्रकार होती है, ऋषि दयानन्द का जीवनचरित उसका प्रमाणिक दस्तावेज हैं जिसका अध्ययन व मनन कर सभी अपने जीवन व मृत्यु का तदनुकूल वरण व अनुकरण कर सकते हैं। हम आशा करते हैं कि पूर्व अध्ययन किये हुए ऋषि भक्तों को इसे पढ़कर मृत्यु वरण के संस्कार प्राप्त होंगे। इसी के साथ यह चर्चा समाप्त करते हैं। ओ३म् शम्।

www.thearyasamaj.org

'क्या वर्तमान युग में वैदिक वर्णव्यवस्था व्यावहारिक है?'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वैदिक वर्ण व्यवस्था क्या है? वैदिक वर्ण व्यवस्था वह सामाजिक व्यवस्था है जिसमें समाज के सभी मनुष्यों को उनके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र में वर्गीकृत किया गया है। यह व्यवस्था वर्तमान की जन्मना जाति व्यवस्था अर्थात् मनुष्य के जन्म पर आधारित व्यवस्था से पूर्व वैदिक काल में प्रचलित रही है। वर्तमान की यह जन्मना जाति व्यवस्था वैदिक वर्णव्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप है। वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था में एक ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय का क्षत्रिय, वैश्य का वैश्य और शूद्र का शूद्र होता है, भले ही उनके गुण–कर्म–स्वभाव कैसे भी, अच्छे व बुरे, क्यों न हों। इस व्यवस्था में एक ब्राह्मण का पुत्र व पुत्री चाहे वह अनपढ़ हो, मद्यपायी और मांसाहारी भी हो, समाज विरोधी कार्य भी करते हों तो भी वह ब्राह्मण कहलाते हैं और शूद्र कुल मे उत्पन्न बालक व बालिकायें सुशिक्षित, सुसंस्कारित, वेदाध्यायी, वेदज्ञ, सच्चरित्र, शुद्ध आचरण करने वाले हों, तब भी वह शूद्र जातियों के ही कहलाते हैं। इन चार वर्ण वाले लोगों व उनकी सन्तानों का वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था में गुणों, कर्मों व उनके स्वभाव से कोई लेना देना नहीं है। दूसरी ओर वैदिक वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण तभी हो सकता है जब कि वह वेदों का ज्ञानी व विद्वान होने के साथ अध्ययन व अध्यापन करता–कराता हो, यज्ञ करता व कराता हो तथा दान देता व लेता हो। उसका पंच महायज्ञों करना तथा सच्चरित्र होना भी आवश्यक व अपरिहार्य है। यदि उसमें यह गुण, कर्म व स्वभाव नहीं हैं तो वह ब्राह्मण न होकर अपने गुणों आदि के अनुसार वर्णवाला होगा जिसमें वह शूद्र भी हो सकता है। इसी प्रकार यदि शूद्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य के लिए आवश्यक गुण आदि हैं तो उसका वही वर्ण होगा जिस प्रकार के गुण उसमें हैं। यह वैदिक वर्ण व्यवस्था सृष्टि के आरम्भ में कब आरम्भ हुई और कब समाप्त हुई, इसकी जानकारी हमारे शास्त्रों से विदित नहीं होती। महाभारत में जन्मना जाति व्यवस्था प्रचलित थी, ऐसा ही प्रतीत होता है। कुछ थोड़े से अपवाद हो सकते हैं परन्तु उनके भी वर्ण के निर्धारण के बारे में समुचित जानकारी नहीं है।

क्या वैदिक वर्ण व्यवस्था व्यवाहारिक है? इसका उत्तर जानने के लिए कुछ अन्य पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है। आज गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था देश–देशान्तर में कहीं सुस्थापित नहीं है। सर्वत्र जन्मना जाति व्यवस्था है जो कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ और इसका विभाजन भी हुआ। भारत का संविधान बना जिसमें देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार दिये गये हैं जो कि वर्णाश्रम व्यवस्था की मूल भावना से मेल नहीं खाते। आज किसी भी जन्मना वर्ण व जाति का मनुष्य अपनी योग्यता आदि के अनुसार भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति तक बन सकता है। इसी प्रकार से सभी वर्णों के लोग अपने गुण, कर्म, स्वभाव, पात्रता व योग्यता के अनुसार समाज में नौकरी, व्यवसाय स्वयं चुनते हैं और करते हैं। कहीं जन्मना ब्राह्मण उच्चाधिकारी हैं तो कहीं क्षत्रिय, वैश्य व जन्मना शूद्र। अतः आज वैदिक वर्णव्यवस्था कहीं प्रचलित नहीं है, यही स्पष्ट होता है। आर्य हिन्दुओं में सर्वत्र जो सामाजिक व्यवस्था प्रचलित है उसका नाम है जन्मना जाति व्यवस्था जो कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप है।

कहा जाता है कि वर्ण का निर्धारण गुरुकुलों में शिक्षारत ब्रह्मचारियों के समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य किया करते थे। आर्यसमाज ने गुरुकुल खोले परन्तु कभी अपने स्नातकों को वर्ण का आबंटन नहीं किया। वर्तमान में वैदिक वर्ण व्यवस्था को स्थापित व प्रचलित करने के लिए आर्यसमाज की ओर से कोई प्रयास व आन्दोलन भी नही हो रहा है।

www.thearyasamaj.org

जन्मना जाति मानने वालों की ओर से भी वैदिक वर्ण व्यवस्था प्रचलित करने का कहीं से किसी प्रकार का कोई आग्रह नहीं है। अतः आज जन्मना जाति व्यवस्था ही प्रचलित है। हमें लगता है कि इस व्यवस्था को ही वर्तमान में व्यावहारिक कहना और मानना होगा। हो सकता है कि हमारे कुछ आर्यबन्धु और विद्वान हमसे सहमत न हों? हम ऐसे मित्रों का स्वागत करते हैं और हमारा मत है कि हम सत्य को ग्रहण करने के लिए तत्पर हैं। अतः विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि वह वैदिक वर्ण व्यवस्था वर्तमान समय में व्यावहारिक है अथवा नहीं, इस पर अपनी सहमति व असहमति सूचित करने की कृपा करें।

श्रम व मनुष्यों के कार्यों के विभाजन पर विचार करें तो आज मनुष्य जो जो काम करता है उसकी संख्या सहस्रों में हैं। किस योग्यता वाला व कौन–2 सा काम करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण व इतर वर्ण का होगा, इसका वर्गीकरण करना असम्भव नही तो कठिन व जटिल अवश्य है। एक व्यक्ति एक साथ नाना प्रकार के कार्य भी करता है और जीवन में समय–समय पर अपने कार्य बदलता भी रहता है। अतः आज की परिस्थितियों में वैदिक वर्ण व्यवस्था को लागू नहीं किया जा सकता, ऐसा लगता है। यह भी तथ्य है कि बिना वैदिक वर्ण व्यवस्था की स्थापना के देश व संसार का अधिकांश कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। हां, वर्तमान व्यवस्था में मनुष्य अपने योग–क्षेम अथवा अभ्युदय व निःश्रेयस से कोसों दूर है। महर्षि दयानन्द एक पौराणिक जन्मना ब्राह्मण परिवार से आये थे। वह गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार सच्चे ब्राह्मण थे परन्तु उनका यह वर्ण कहीं निश्चित नहीं किया गया था। वह योग–क्षेम और मोक्ष के पात्र बने। उनके अनुयायी अनेक वर्णों से थे जिन्होंने वेदाध्ययन किया और वेद प्रचार व समाज सुधार आदि के कार्यों सहित पंचमहायज्ञों को भी पूरी निष्ठा से करते थे। उनका भी कहीं कोई वर्ण निर्धारित नहीं किया गया। वह सभी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के अधिकारी बने। महर्षि दयानन्द ने वेदाध्ययन सहित सन्ध्या व यज्ञ करने, जो कि वर्णव्यवस्था में केवल द्विज ही कर सकते हैं, का सबको अधिकार दिया है तथा आर्यसमाज में सभी न्यूनाधिक करते भी हैं जिससे सभी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के अधिकारी बनते हैं। उन्होंने समर्पण मन्त्र लिखकर सभी सन्ध्या करने वालों को मोक्ष का अधिकरी बना दिया है। ईश्वर को भी यह स्वीकार है, ऐसा प्रतीत होता है। मनुष्य जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में वर्ण बाधक नहीं बन रहे हैं। अतः हमें लगता है कि आज के समय में सब मनुष्य एक ही वर्ण **'मनुष्य वर्ण'** के ही हैं, भले ही वह अपने विषय में कुछ भी मानते व कहते हों। सबको मनुष्य मानकर और वैदिक कर्मकाण्ड व परम्पराओं आदि का पालन कर कोई भी मनुष्य अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति कर सकता है। योगाभ्यास कर समाधि अवस्था को प्राप्त होकर ईश्वर साक्षात्कार भी कर सकता है। इसमें कहीं कोई बाधा नहीं है। अतः आज बिना वर्णव्यवस्था के समाज के सभी काम किये जाना सम्भव है। यह भी वर्णन कर दें कि महर्षि दयानन्द ने एक स्थान पर वर्ण व्यवस्था के स्वरूप से खिन्न होकर इसे **"मरण व्यवस्था"** लिखा है। वह भी यह स्वीकार करते हुए प्रतीत होते हैं कि उन्हें लगता था कि वैदिक वर्ण व्यवस्था को प्रचलित करना सरल नहीं है।

इस आधार पर हमें लगता है कि यद्यपि वैदिक वर्णव्यवस्था सिद्धान्त रूप में सत्य, निर्विवाद एवं सर्वोपरि सामाजिक व्यवस्था है परन्तु आज वह व्यवहारिक नहीं है। भविष्य के प्रति कुछ कहा नहीं जा सकता परन्तु आज जैसी परिस्थितियां हैं, उससे नहीं लगता कि भविष्य में कभी वैदिक वर्णव्यवस्था वह स्थान ले सकेगी जैसा कि जन्मना वर्ण व्यवस्था के अस्तित्व व प्रचलन में आने से पूर्व वैदिक वर्ण व्यवस्था का था। जो भी हो, हम एक साधारण पाठक व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने वाले व्यक्ति हैं तथा हमारा इस विषय में कोई पूर्वाग्रह नहीं है। आर्य समाज के विद्वानों से अनुरोध है कि वह इस विषय में अपने विचार देकर हमें कृतार्थ करें। हम उनके आभारी होगें।

–मनमोहन कुमार आर्य पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001 फोनः09412985121

www.thearyasamaj.org

'सभी मनुष्यों के करणीय पाचं सार्वभौमिक कर्तव्य'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य का जन्म माता–पिता व सृष्टिकर्ता ईश्वर के द्वारा होता है। ईश्वर द्वारा ही सृष्टि की रचना सहित माता–पिता व सन्तान का जन्म दिये जाने से ईश्वर प्रथम स्थान पर व माता–पिता उसके बाद आते हैं। आचार्य बालक व मनुष्य को संस्कारित कर विद्या व ज्ञान से आलोकित करते हैं। अतः अपने आचार्यों के प्रति भी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह अपने सभी आचार्यों के प्रति श्रद्धा का भाव रखें और उनकी अधिक से अधिक सेवा व सहायता करें। मनुष्य का एक कर्तव्य संसार के सभी मनुष्यों व इतर प्राणियों के प्रति भी होता है। वह कर्तव्य उनके प्रति सदव्यवहार सहित अपनी सामर्थ्यानुसार उनके भोजन आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। वैदिक धर्म व संस्कृति में मनुष्यों इन सभी कर्तव्यों की पूर्ति के लिए पंच महायज्ञों का विधान किया गया हैं जिन्हें 1– ब्रह्मयज्ञ वा सन्ध्या, 2– देवयज्ञ अग्निहोत्र, 3– पितृयज्ञ, 4– अतिथि यज्ञ तथा 5– बलिवैश्वदेव यज्ञ कहते हैं। ब्रह्मयज्ञ व सन्ध्या क्या है? ब्रह्मयज्ञ वा सन्ध्या ईश्वर के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने सहित सम्यक् रीति से उसका गुण कीर्तन करने को कहते हैं। वेदों परमात्मा ने अनेक वेद मन्त्र ऐसे दिए हैं जिनमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना आदि का उल्लेख, वर्णन वा विधान है। इन मन्त्रों के अर्थों को समझ कर इनसे सन्ध्या वा ईश्वर का ध्यान किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द ने वेद व समस्त वैदिक साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर एवं योग में सफलता व सिद्धि प्राप्त कर सन्ध्या को तर्क एवं युक्ति के आधार पर उसकी विधि लिख कर हमें प्रदान की है। इसे हम ईश्वर का ध्यान करने की वैज्ञानिक विधि कह सकते हैं जो ईश्वर उपासना में शीर्षस्थ स्थान रखती है। सन्ध्या के आरम्भ में मन को एकाग्र करने व उसे इन्द्रियों के विषयों से पृथक कर ईश्वर में ही लगाने के लिए गायत्री मन्त्र के पाठ से संकल्प करने का विधान किया गया है। इसके बाद सन्ध्या के उद्देश्य को विचार कर वेदमन्त्र 'ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये' मन्त्र से आचमन का विधान किया गया है। इसके बाद क्रमशः इन्द्रियस्पर्श, मार्जन, प्राणायाम्, अघमर्षण, मनसापरिक्रमा, उपास्थान, गायत्रीमन्त्रपाठ, समर्पण एवं नमस्कार मन्त्रों का विधान किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को समझ कर व मन्त्रों का अर्थ जानकर प्रातः व सायं सन्ध्या करने से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का कालान्तर में लाभ होता है। महर्षि ने इस विषय में लिखा है कि '(सभी मनुष्यों को) ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूत यज्ञ, भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेवयज्ञ) और नृयज्ञ (अतिथियज्ञ) में विहित वेद मन्त्र, मन्त्रों के अर्थ और जो–जो करने का विधान लिखा है, सो–सो यथावत् करना चाहिये। एकान्त देश में अपने आत्मा, मन और शरीर को शुद्ध और शान्त करके उस–उस कर्म में चित्त लगा के तत्पर होना चाहिये। इन नित्यकर्मों के फल ये हैं कि (सन्ध्या, योगाभ्यास वा स्वाध्याय से) ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना। उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है।' इस विषय में यह कहना कि ऋषिकृत विधि से वैदिक सन्ध्या करने से मनुष्य मनुष्य व महात्मा बनता है और इसे न करने से वह सन्ध्या से दुर्गुण निवृत्ति व सात्विक भ्रद भावों व आत्मोन्नति से वंचित रहता है। अतः सभी को 'सन्ध्या' अवश्य करनी चाहिये।

सृष्टि के आरम्भ से प्रचलित पांच वैदिक कर्तव्यों में दूसरा स्थान देवयज्ञ का है जिसे अग्निहोत्र व हवन भी कहते हैं। यह देवयज्ञ भी प्रातः सूर्योदय के समय व उसके कुछ समय बाद तथा सायं सूर्यास्त से पूर्व किया जाता है। देवयज्ञ में दीपक, कपूर वा शुद्ध समिधाओं (आम्र आदि काष्ठ के अष्टांगुल व कुछ छोटे बड़े टुकड़े यज्ञकुण्ड के आकार के अनुसार) से यज्ञकुण्ड में अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है और उसमें वेदों मन्त्रों से कुछ कियायें करते हुए गोघृत व केसर, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ, अन्न व स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद वनस्पतियों, मिष्ट पदार्थ गुड़ व शर्करा तथा बलवर्धक शरीर के पोषक तत्वों बादाम, काजू व छुआरे आदि से अग्नि में आहुतियां देकर उन्हें भस्म किया जाता है जिससे वह सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जायें। इसका परिणाम यह होता है कि वायु की अशुद्धियां दूर होकर वातावरण स्वास्थ्य के लिए व रोगों आदि में लाभप्रद होता है। वेद मन्त्रों के उच्चारण से वह स्मरण हो जाते हैं

www.thearyasamaj.org

जिससे वेदों व उसके मन्त्रों की रक्षा एवं उनके स्वाध्याय में रुचि होकर आत्मा, बुद्धि व शरीर को लाभ होता है। वेदों मन्त्रों को बोलने से मन्त्रों में निहित यज्ञ करने के लाभ भी विदित होते हैं। इन सबके लिए भी महर्षि दयानन्द जी रचित पंचमहायज्ञविधि पुस्तक लिखी है। इसके इतर डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी की "यज्ञ मीमांसा" पुस्तक का अध्ययन करना चाहिये जिसमें यज्ञ से होने वाले लाभों एवं यज्ञ संबंधी सभी विषयों का व्यापक रुप से वर्णन किया गया है। सभी मनुष्यों का तीसरा प्रमुख कर्तव्य है अपने माता–पिता व आचार्यों आदि की तन, मन व धन से सेवा करना, उन्हें सन्तुष्ट व प्रसन्न रखना एवं उनकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति करना जिससे उनकी सेवा के लाभ सहित उनकी विद्या व अनुभवों का लाभ सभी को प्राप्त हो सके, किया जाता है। ऐसा करने से वैदिक परम्परायें देश व संसार में प्रचलित होकर प्रवाहमान रहती हैं।

पितृ यज्ञ के बाद चौथा यज्ञ बलिवैश्वदेव यज्ञ करना होता है। इस यज्ञ में जब भोजन सिद्ध हो अर्थात् बन कर तैयार हो, तब जो कुछ भोजनार्थ बने उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार को छोड़कर घृतमिष्टयुक्त अन्न जो कुछ पाकशाला में सिद्ध हो, उसको दिव्यगुणों के अर्थ पाकाग्नि में विधिपूर्वक नित्य होम करना होता है। यह आहुतियां गांव आदि में चुल्हे अथवा दैनिक अग्निहोत्र के बाद यज्ञाग्नि में भी दी जा सकती हैं। बलिवैश्वदेवयज्ञ करने के पक्ष में ऋषि दयानन्द जी ने अथर्ववेद और यजुर्वेद के मन्त्रों के प्रमाण देते हुए लिखा है कि 'हे परमेश्वर ! आपकी आज्ञा से नित्यप्रति बलिवैश्वदेव कर्म करते हुए हम लोग चक्रवर्तिराज्यलक्ष्मी, घृतदुग्धादि पुष्टिकारक पदार्थों की प्राप्ति और सम्यक् शुद्ध इच्छा से नित्य आनन्द में रहें। माता–पिता–आचार्य आदि की उत्तम पदार्थों से नित्य प्रीतिपूर्वक सेवा करते रहें। जैसे घोड़े के सामने बहुत से खाने वा पीने के पदार्थ धर दिये जाते हैं, वैसे सब की सेवा के लिए बहुत से उत्तम–उत्तम पदार्थ देवें जिनसे वह प्रसन्न होके हम पर नित्य प्रसन्न व सन्तुष्ट रहें। हे परमगुरु अग्नि परमेश्वर ! आप और आपकी आज्ञा से विरुद्ध व्यवहारों में हम लोग कभी प्रवेश न करें, और अन्याय से किसी प्राणी को पीड़ा न पहुंचावें, किन्तु सब को अपना मित्र और अपने को सब का मित्र समझ के परस्पर उपकार करते रहें।' इसे भी पूर्णरुप से जानने व समझने के लिए ऋषिप्रोक्त विधि का अनुशीलन करना चाहिये। सभी मनुष्यों का पांचवा कर्तव्य अतिथि यज्ञ का अनुष्ठान है। इसका विधान करते हुए ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं कि 'अतिथियों की यथावत् सेवा करनी होती है। जो पूर्ण विद्वान् परोपकारी, जितेन्द्रिय, धार्मिक, सत्यवादी, छल–कपट–रहित, नित्य भ्रमण करने वाले मनुष्य होते हैं, उनको 'अतिथि' कहते हैं। जिसके घर में पूर्वोक्त गुणयुक्त विद्वान उत्तम गुणविशिष्टसेवा के करने योग्य अतिथि, अर्थात् जिसकी आने जाने की कोई भी निश्चित तिथि नहीं हो, जो अकस्मात् आवें और जावें, जब ऐसा मनुष्य गृहस्थों के घर में प्राप्त हो, तब उसको गृहस्थ अत्यन्त प्रेम से उठकर नमस्कार करके, उत्तम आसन पर बैठाके, पश्चात् पूछे कि आपको कुछ जल व किसी अन्य वस्तु की इच्छा हो सो कहिये। इस प्रकार उसको प्रसन्न कर और स्वयं स्वस्थचित्त होके उससे पूछें कि हे व्रात्य उत्तम पुरुष ! आपने यहां आने के पूर्व कहां वास किया था। हे अतिथि ! यह जल लीजिये। और हम लोग अपने सत्य प्रेम से आपको तृप्त करते हैं, और सब हमारे इष्ट मित्र लोग आपके उपदेश से विज्ञानयुक्त होके सदा प्रसन्न हों। हे विद्वान् व्रात्य ! जिस प्रकार से आपकी प्रसन्नता हो वैसा ही हम लोग काम करें, और जो पदार्थ आपको प्रिय हों उसकी आज्ञा कीजिये। जिस प्रकार से आपकी कामना पूर्ण हो वैसी आपकी सेवा हम लोग करें। जिससे आप और हम लोग परस्पर सेवा और सत्संगपूर्वक विद्यावृद्धि से सदा आनन्द में रहें।' इस प्रथा वा अतिथियज्ञ का कुछ विकृत रूप हमारे परिवारों में यदा–कदा कुछ संबंधियों व मित्रों का समय–समय पर एक–दूसरे के यहां आना–जाना आदि ने ले लिया है। परिवारों मे यदि सच्चे विद्वान्, साधु व महात्मा आते–जाते हैं, तो उनके उपदेशों से परिवारों का निश्चय ही कल्याण हो सकता है। इस प्राचीन वैदिक प्रथा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त पांच वैदिक दैनिक कर्तव्य वा यज्ञ संसार के सभी लोगों के लिए आवश्यक व उपादेय हैं। जो इन्हें करेगा वह अपने इस मनुष्य जन्म व परजन्म में लाभान्वित होने सहित अपने धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को सवांरेगा। नहीं करेगा तो उसकी स्वयं की हानि होगी। न करना आत्मघाती और करना उन्नति व सुख का कारण व आधार होगा। इसी के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

www.thearyasamaj.org

काश्मीर और लद्दाख की यात्रा

(वैशाख (शुक्ल पक्ष) से फाल्गुण संवत् १९१२ वि. पर्यन्त)

जन्म-चरित्र

जब मेला हो चुका तब हृषीकेश में जाके सन्यासियों और योगियों से योग की रीति सीखता और सत्संग करता रहा।

इसके आगे फिर लिखेंगे।

हस्ता. दयानन्द सरस्वती

कलकत्ता-कथ्य

हरिद्वार से ऋषिकेश- साधु लोग चले गए और मैं हरिद्वार से ऋषिकेश की ओर प्रस्थित हो गया। हिमालय में भ्रमण करना और योगियों से योगसाधना के बारे में उपदेश ग्रहण करना और साधुओं को संगठित करना ही मेरा उद्देश्य था। कहीं-कहीं योगियों से मिलने का अवसर भी मिला था।

ऋषिकेश से श्रीनगर-ऋषिकेश से परिव्राजक साधुओं से मिलित होकर लक्ष्मण झूला आया। वहाँ से टिहरी आकर श्रीनगर तक पहुंच गया था। केदारघाट के योगी साधुओं के साथ मिलकर तीन सप्ताह का समय योगाभ्यास में व्यतीत किया।

श्रीनगर से अमरनाथ- श्रीनगर से अमरनाथ जाना मैंने आवश्यक समझा था। सुना था कि अमरनाथ में कोई न कोई योग-सिद्ध पुरुष सदा ही रहते है। उनमें योग-बल से देहत्याग करने की शक्ति है और कैवल्य-लाभ की सहज शक्ति उनमें सदा ही है। अगल-बगल बहुत से योग-सिद्ध पुरुषों के स्वेच्छामृत्यु के वाद जीर्ण कंकाल वहाँ ही पड़े रहते हैं। तिब्वती साधु लोग उन कंकालों के टुकड़ों को तिब्बत में ले जाते हैं। तिब्वत के साधु लोग उन टुकड़ों को बाजार में बेच देते हैं।

अमरनाथ जाने के लिए मैं तैयार हो गया था। साधु-दर्शन होगा, ऐसा सुना था। बेताल-सिद्ध नाम के किसी योग-सिद्ध पुरुष के बारे में भी सुना था। पहलगाँव, चन्दनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी होता हुआ मैं अमरनाथ पहुंच गया था। वहाँ किसी गुफा में सरदी के कारण शुक्ला प्रतिपदा से बरफ जमते-जमते पूर्णिमा में छह हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा बरफ का शिवलिंग वन जाता है। उसी का नाम अमरनाथ शिवलिंग है। कृष्णा प्रतिपदा से वह शिवल्गिं क्षय को प्राप्त होते-होते अमावस्या में नाम मात्र ही रहता है। यह अमरनाथ शिवलिंग का महात्म्य कहा जाता है।

वहाँ बेताल-सिद्ध बाबा का दर्शन मिला था। उन्होंने मुझको मोक्ष लाभ का अति सरल उपाय यह बतलाया कि किसी नव-जात पुं-शिशु को चोरी करके लाना और अमावस्या की मध्य रात्रि में श्मशान भूमि में उस जीवित शिशु पर बैठे हु चामुण्डा देवी के बीजमन्त्र का एक लाख, एक हजार, एक सौ क बार जप करने से अतिशीघ्र मोक्ष मिल जाता है।" मैं उनकी इस साधन-प्रणाली से सुनकर ही चला आया था।

अमरनाथ से श्रीनगर में- अमरनाथ से श्रीनगर आकर मैंने सुना था कि बौद्ध साधु लोग विभिन्न स्थानों पर परिभ्रमण करके तिब्बत जा रहे हैं। साधुओं के लिए राजनैतिक विधि-निषेध बहुत ही ढीला है। मैं बहुत ही प्रयत्न करके बौद्ध-साधु-तीर्थयात्रियों में सम्मिलित हो गया था। श्रीनगर से मैं क्षीर-भवानी के मन्दिर में योगी साधुओं के सन्धान में गया था, लेकिन निराश होकर चला आया था।

श्रीनगर से गन्दरबल- बौद्ध साधुओं के साथ मैं डेढ़ योजन दूरी पर गन्दरबल नामक स्थान में आया था। क्षीर-भवानी मन्दिर यहाँ से समीप ही है। गन्दरबल से तुलमुल आया। इस गाँव के प्रान्त भाग में ही क्षीर भवानी का मन्दिर है। बौद्ध साधुओं ने मेरे लिये लेह शहर के मन्त्री और कार्गिल शहर के तहसीलदार के नाम पर परिचय पत्रों का प्रबन्ध कर दिया था। मैं साधुओं के साथ सिन्धु नदी के तट का अवलम्बन करके पैदल तिब्बत प्रस्थित हो गया।

गन्दरबल से कंगन- गन्दरबल से हम नुन्नुर, जोजिला आदि स्थानों पर होकर कंगन नामक स्थान पर पहुंचे। सिन्धु नदी के तट देश में अखरोट, नासपाती, सेब, बादाम और अंगूर आदि के असंख्य पेड़ पौधे हैं। भगवान् की सुन्दर सृष्टि को देखते हुए तिब्बत के अन्तर्वर्ती स्थानों की ओर हम अग्रसर होने लगे। मार्ग में बौद्ध साधुओं से मेरी धर्म-विषयक चर्चा भी हुआ करती थी। हम हमेशा ही कहा करते थे कि गौतम-बुद्ध ने कभी अलग से धर्म-सम्प्रदाय स्थापित करना नहीं चाहा था। परन्तु उनके अनुयायी कतिपय व्यक्तियों की प्रबल चेष्टा से बौद्ध सम्प्रदाय की स्थापना हुई थी और इनकी मृत्यु के बाद महायान और हीनयान आदि उप-सम्प्रदायों का उद्भव हुआ था। मैं कहा करता था कि गौतम बुद्ध शुद्ध हिन्दू संन्यासों थे। हमारी इस बात को सुनकर कुछ बौद्ध साधु मुझसे रुष्ट हो गये और कोई-कोई सन्देह भी करने लगे थे।

कंगन से मटयन- हम लोगों ने कंगन से गुंड, हायान, गंजन, सोना मार्ग, द्रास, सिरबल, बालतल आदि स्थान अतिक्रमित किये थे। बालतल से जोजिला नामक गिररिपथ पार होने से ही तिब्बत राज्य शुरू हो जाता है। यह गिरिपथ ही मध्य एशिया से भारत आने-जाने का प्राचीन पथ है। इस रास्ते से परिचय पत्र लेकर हम तिब्बत के पहले गाँव मटयन में पहुंच गये थे। अब हम लोग हिमालय पार तिब्वत में थे।

मटयन से कार्गिल- मटयन से पानदास, दुनुदुलयांग, तासगाम, शमसा खुर्बु, पड़ाव आदि ग्रामों से होकर हम सब कार्गिल नामक शहर पहुंच गए थे। कहाँ से लेह शहर लगभग १५ योजन है। लेह लद्दाख राज्य का प्रधान शहर है। कार्गिल में लगभग सभी धर्मावलम्बी निवास करते हैं।

कार्गिल से लेह शहर- कार्गिल लद्दाख और काश्मीर का मध्यवर्ती स्थान है। कार्गिल से हमको मुलबेक चम्बा नामक गाँव में जाना था। पर्वत पर आरोहण करके बहुत ही ऊँचे रास्ते से करीब तीन योजन रास्ता चलने में १२ घण्टे का समय लगता है। प्राणवायु वहाँ बहुत ही विरल है, इसलिये जाना कठिन है। प्रातःकाल प्रस्थित होके हम लोग रात को पहुंच गए थे। कार्गिल से लगभग ढाई योजन की दूरी पर लामाओं के मठ और बौद्ध स्तूप दृष्टिगोचर हुए। दो योजन चलने पर बोध खर्बु नामक गांव में हम लोग पहुंचे। प्रत्येक गांव में मृत व्यक्तियों का श्मशान-भस्म कोटा

www.thearyasamaj.org

प्राचीन इतिहास बड़ा महान और गौरवशाली

-खुशहाल चन्द्र आर्य

चरित्रवान और मर्यादावादी, श्री कृष्ण जैसा महान घर नीतिज्ञ, भीष्म जैसा ब्रह्मचारी, अर्जुन जैसा धनुषधारी, भीम जैसा बलवान, महात्मा बुद्ध और महावीर जैसा अहिंसावादी, महर्षि दयानन्द जैसा मानव हितकारी व वैदिक विद्वान, आपको विश्व में ढूढने से भी नहीं मिलेगा । इसी प्रकार भारत के इतिहास व वैदिक विद्वान, आपको विश्व में ढूढ़ने से भी मिलेगा । इसी प्रकार भारत के इतिहास का क दूसरा कमजोर पक्ष भी है, वह यह है कि भारत के इतिहास में अन्धविश्वास पूर्ण, असम्भव, तर्क, बुद्धि व विज्ञान के विरुद्ध, प्रकृति नियम के विपरीत बातें व घटनाएँ भी भरी पड़ी हैं, जिनमें कुछ घटनों व बातों का वर्णन यहां इस लेख में कर रहे हैं ।

(१) **हनुमान, सुग्रीव आदि बन्दर नहीं थे-** रामायण काल में हनुमान, बाली, सुग्रीव, अंगद आदि जिन्होंने श्री राम को विजय दिलवाने में अत्याधिक सहायता की और उनका जीवन भी वीरता, बुद्धिमता व स्वामी भक्ति से भरा पड़ा था, फिर भी भारत के मूर्ख इतिहासकारों ने उनको बन्दर जाति की संज्ञा दे रखी है जो बिल्कुल झूठी और मन घडन्त बात है । सच्चाई यह है कि उस समय जो लोग जंगलों व पहाड़ों में रहते थे उनको वानर जाति से सम्बोधित कते थे । वैसे वे अन्य पुरुषों की तरह केवल पुरुष ही नहीं थे बल्कि विद्वान् बुद्धिवान-बलवान व स्वामी भी थे । वे भी गृहस्थी रहते हुे एक दूसरे के दुःख-सुख के साथी बन कर राजा-प्रजा के रूप में नियन्त्रित रहते थे । जैसे वर्तमान में बंगाल में एक नाग जाती है । वे नाग (साँप) नहीं है, अन्य मनुष्यों की भांति मनुष्य ही हैं । इसी प्रकार उस समय जो लोग जंगल व पर्वतों पर रहते थे । उनको वानर बोला जाता था । वे भी बन्दर न होकर मनुष्य ही थे । पर उन समझ लोगों ने उस वानर जाति के लोगों को बन्दर मान लिया और उनके शरीर की बनावट भी पूँछ व बन्दर जैसा चेहरा बनाकर बन्दर का ही रूप दे दिया, परन्तु यह बिल्कुल सफेद झूठ है । हनुमान, बाली सुग्रीव, अंगद आदि बन्दर नहीं मनुष्य ही थे । यदि बन्दर होते तो उनकी स्त्रियां भी बन्दर होती, परन्तु बाली की धर्मपत्नी तारा को अति सुन्दर व पतिव्रता स्त्रियों में माना गया है । इससे सिद्ध होता है कि वे बन्दर नहीं बल्कि मनुष्य थे । रामायण की एक घटना से यह और भी अधिक सुस्पष्टा हो जाती है । यह घटना हंसी भांति है । जब श्रीराम और लक्ष्मण, सीता जी की खोज में इधर-उधर भटक रहे थे, सुग्रीव जो हनुमान जी के साथ ऋषिमूक पर्वत पर बैठा हुआ था, उसने श्रीराम और लक्ष्मण को वनवासी वेष में अपनी ओर आते देखा तो इस भय से कि कहीं ये मेरे बड़े भ्राता बाली के भेजे हुए कोई गुप्तचर तो नहीं है । ये जानकारी करने के लिए सुग्रीव ने हनुमान जी को उनके पास भेजा । जब हनुमान जी ने श्रीराम और लक्ष्मण से यहां घूमने का कारण पूछा तब हनुमान जी की पूछने की शैली व भाषा इतनी शिष्ट व शुद्ध थी जिसको सुनकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि ये व्यक्ति मुझे चारों वेदों का विद्वान जान पड़ता है कारण इससे हमारी काफी लम्बी बातचीत हुई, इन्होंने कहीं पर भी बोलने में व्याकरण की अशुद्धि नहीं कि और बहुत ही शिष्ट भाषा में बाते की है । इनकी बातों का मेरे ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है । इससे यह सिद्ध होता है कि हनुमान जी बन्दर नहीं थे बल्कि वेदों के विद्वान और एक अति सभ्य व्यक्ति थे । ऐसे वैदिक विद्वान लोगों को बन्दर बताना उनका ही नहीं अपना भी अपमान है ।

(२) **हनुमान जी का बालकपन् में सूर्य को मुख में रख लेनाः** हमारे पौराणिक भाई कहते भी हैं और हनुमान चालीसा में पढ़ते भी है कि हनुमान जी ने बालकपन्न में सूर्य को मुख में रख लिया था जिससे पूरे विश्व में अन्धेरा छा गया था । यह बात बुद्धि, तर्क व विज्ञान के विरूद्ध है । ऐसी बातों से हमारे इतिहास का गौरव नहीं बढ़ता बल्कि मूर्खता और अन्धविश्वास ही जाहिर होता है । सूर्य पृथ्वी से तेरह हजार गुणा बड़ा है और पृथ्वी से कितना अधिक दूर है और कितना गर्म है इसलिए हनुमान जी का सूर्य को मुख में रख लेना बिल्कुल असम्भव है तथा मिथ्या है । ऐसी असम्भव व बातें केवल हमारे पौराणिक भाई ही कहते है ऐसी बात नहीं मुस्लिम भाई भी कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद साहब ने चान्द के दो टुकड़े अपनी ऊंगली से कर दिये । ऐसी बातों से हमारे इतिहास का गौरव नहीं बढ़ता बल्कि मूर्खता और अन्धविश्वास ही जाहिर होता है । सूर्य पृथ्वी से तेरह हजार गुणा बड़ा है और पृथ्वी से कितना अधिक दूर है और कितना गर्म है इसलिए हनुमान जी का सूर्य को मुख में रख लेना बिल्कुल असम्भव है तथा मिथ्या है । ऐसी असम्भव व बातें केवल हमारे पौराणिक भाई ही कहते है ऐसी बात नहीं मुस्लिम भाई भी कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद साहब ने चान्द के दो टुकड़े अपनी ऊंगली से कर दिये । ऐसी बातें पूर्णतः असम्भव हैं, इनके ऊपर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए ।

(३) **कुन्ती का पुत्र कर्ण, कान से उत्पन्न हुआ थाः-** यह भी कहा जाता है कि कर्ण, कुन्ती के कुँवारी के हुआ था और अपनी ईज्जत बचाने के लिए कुन्ती ने कर्ण को एक डिब्बा में बन्द करके किसी नदी में बहा दिया । वह बहता हुआ दुर्योधन के किसी सेवक के हाथ लगा गया । वह उस डिब्बे को दुर्योधन के पास लाया और दुर्योधन ने कर्ण को अपने छोटे भाई के समान पालन-पोषण किया और बड़ा होने पर वह बड़ा वीर, धनुष्यधारी व दानवीर बना और महाभारत में दुर्योधन की तरफ से बड़ी बहादुरी से लड़ा । यह घटना सच हो सकती है कोई असम्भव नहीं परन्तु यह कहना कि कर्ण सूर्य का पुत्र था और कुन्ती के कान से पैदा हुआ था, यह बात सरासरी झूठ है कारण प्रकृति के नियम के विरूद्ध कोई भी नहीं हो सकता । हमें इस प्रकार के अन्ध विश्वास को कभी नहीं मानना चाहिए ।

(४) **सीता, राजा जनक के हल जोतते समय जमीन से निकली थी :-** पौराणिक भाईयों का यह कहना कि सीता, राजा जनके के हल जोतते समय जमीन में गढ़ी हुई मिली । यह बात भी सरासरी झूठ मालूम पड़ती है । इसके पीछे सच्चाई यह है कि हल के नीचे जो फाली लगती है जो जमीन को फाड़ती है, उस काली को संस्कृत में सीता

www.thearyasamaj.org

कहते हैं। बस इसी से यह भ्रान्ति फैलाई गई है कि सीता जमीन से निकली थी। राजा जनक को जमीन जोतनी पड़े यह भी असम्भव जान पड़ता है

(५) **श्रीराम ने स्वरूण खाँ की नाक काट लीः** रामायण में ऐसी घटना आती है कि जब श्रीराम, लक्ष्मण, सीता के साथ चौदह वर्ष का बनवास काट रहे थे तब रावण की बहन स्वरूपण खाँ, श्री राम की सुन्दरता देख कर उनसे विवाह करने का अपना प्रस्ताव रखा। श्री राम ने यह कहकर इनकार कर दिया कि मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी सीता है, पर लक्ष्मण के पास उसकी धर्मपत्नी नहीं है उससे निवेदन करो। जब वह लक्ष्मण के पास गई तो लक्ष्मण ने उसे माता जी कहकर सम्बोधित किया और प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया। तब कहने वाले को कहते हैं कि जब दोनों तरफ से इनकार हो गया तो श्री राम ने स्वरूपण खां की नाक काट ली। पर यह न समझने की बात है। श्री राम जैसा आदर्श और मर्यादा का पालन करने वाला व्यक्ति किसी औरत की नाक काट लेवे। इसके पीछे सच्चाई यही है कि किसी की बात न मानना ही उसकी नाक काटना है। यही कहावत इस पर लागू होती है।

(६) **द्रौपदी के चीर हरण के समय श्री कृष्ण ने चीर को बढ़ा दिया :-** जैसा कि महाभारत में यह घटना आती है कि युधिष्ठिर ने दुर्योधन के मामा शकुनी के साथ जूंवा खेलने में पूरा राज्य हरा दिया, तब अन्त में उसने द्रौपदी को भी दाव पर लगा दी और हारने से द्रौपदी भी दुष्ट दुर्योधन के कब्जे में आ गई। दुर्योधन ने अपने छोटे भाई दुस्साशन से द्रौपदी के कपड़े उतारते हुए खेंच कर लाने को कहा। जब दुस्साशन द्रौपदी का चीर हरण कर रहा था और उसे निर्वस्त्र करना चाहता था। उस समय द्रौपदी ने श्री कृष्णा से अपनी लाज बचाने की प्रार्थना की और श्री कृष्ण ने उसका चीर इतना बढ़ा दिया कि वह दुशशासन से निर्वस्त्र नहीं हो सकी। यह बात सुनने में तो बहुत अच्छी लगती है, पर सृष्टि नियम के विरूद्ध है। कपड़ा जितना बड़ा होगा उतना ही रहेगा। उसमें बिना जोड़े बढ़ा नहीं सकते। इसमें सच्चाई यह है दुर्योधन श्री कृष्ण के स्वभाव से परिचित थे। वह जानते कि यदि मैंने द्रौपदी को निर्वस्त्र कर दिया तो श्री कृष्ण जहां कहीं पर भी होगा, वह सुनते ही आयोगा और हम सब को जान से मार देगा। इसलिए दुर्योधन श्री कृष्ण के भय से केवल इतना ही किया द्रौपदी को दुस्साशन से खिंचवाकर सभा में ले आया जहाँ दादा भीष्म, गुरु द्रौण, गुरु कृपाचार्य आदि सभी बैठे थे। उसे निर्वस्त्र नहीं किया। दुर्योधन को यह भी भय था कि श्री कृष्ण किसी कारण वश अब नहीं आया तो वह जब भी आवेगा तभी हमें मारे बगैर नहीं रहेगा। इसलिए उसने द्रौपदी का चीर हरण करवाया ही नहीं। सभा में खिंचवा कर जरूर लाया। परन्तु श्रीकृष्णा के अन्धभक्तों ने श्री कृष्णा को भगवान का अवतार बताने के लिए चीर बढ़ा दिया वाली असम्भव बात जोड़ दी।

में रखा जाता है और मृत व्यक्तियों का नाम प्रस्तर-खण्ड में लिखकर रख दिया जाता है। लद्दाख के राजा लोग प्राचीन काल में इन प्रस्तरों के लिये प्राचीर निर्माण कर देते थे और पुण्य संचय करते थे। हमने ऐसे बहुत से प्रस्तरों को देखा था। इस रूप में नुरला नामक गांव अतिक्रमित करने के बाद लिकिर गोम्पा दृष्टिगोचर हुआ था। लिकिर पर्वत बहुत ऊँचा है। बौद्धों के लिये यह बहुत ही पवित्र स्थान है। सोने के सिंहासन पर सोने की बुद्ध मूर्ति है। वज्रपाणि, लोकेश्वरी, वज्रतारा, अवलोकितेश्वर, शाक्यथुब्बा, मंजुश्रा आदि बौद्ध देव-देवियों की मूर्तियां शोभित हैं।

इसके बाद हम न्यीमू की ओर अग्रसर हुए। वहाँ से लद्दाख राज्य के प्राचीन सर्वश्रेष्ठ शहर बजगो का ध्वंसावशेष देख लिया था। इसके बाद हम न्यीमू में पहुँच गए थे। न्यीमू से बौद्ध लोग लेह शहर आते हैं और आगे सुप्रसिद्ध हिमिस मठ को जाते हैं। न्यीमू ग्राम से आकर नदी पार होकर हम पितक नामक स्थान में आए थे। वहाँ पहाड़ पर फियाँ नामक गोम्पा है। इस उपत्यका में लेह शहर, स्तोक गांव और सिन्धु नदी सदृश मूल्यवान् सम्पद हैं। इसके बाद ही हम लेह शहर में पहुंच गए थे। लद्दाख के अधिवासी लगभग सब के सब कृषिजीवी हैं। धनी लोगों को छोड़कर सब गरीब परिवारों में एक ही परिवार के सब भाई मिलकर एक ही स्त्री से विवाह करते हैं।

लद्दाख प्रान्त के लगभग सब ही गोम्पा, मठ, मन्दिरों में हमने किसी न किसी सिद्ध-योगी पुरुष से मिलना चाहा था। त्यागी संन्यासियों का भी अनुसन्धान किया था। परन्तु दुर्भाग्यवश हमको कोई भी नहीं मिला। योगी नाम सुनकर जिन-जिन से वार्तालाप किया था, वे सब कोई प्रेत-पूजा के तन्त्र-मन्त्रों को ही योग-विद्या के उपाय समझते हैं। साधु-संन्यासी बोलने से बुद्ध-मन्दिर के पुरोहित ही समझे जाते हैं। बाहर से कोई भी वहाँ जाय तो वह सन्देह का पात्र बन जाता है। मुसलमानों को मठ-मन्दिर, मूर्ति और विहार ध्वंस करने के कारण शत्रु हु समझते हैं। विदेशी ईसाइयों को खृष्टान राज्य विस्तार करने के अग्रदूत समझते हैं। हमको भी इन्होंने पहले-पहले गुप्त ईसाई समझ लिया था। वहां से हमने हिमिस गोम्पा ही समझी जाती है। हम लद्दाख प्रान्त के लेह शहर को छोड़कर हिमिस गोम्पा जाने के लिये तैयार हो गए। मेरे साथ जितने बौद्ध साधु आए थे वे सब एक वर्ष के लिये लद्दाख में ही रह गए।

लेह शहर से हिमिस गोम्पा- यह गोम्पा लेह शहर से तीन योजन पूर्व दिशा में है। बगल में ही स्योक नामक गांव में लद्दाख के शेष राजवंशधर बहुत ही विलासिता और कर्जे से बंधे हुए रहते हैं। पहाड़ी मार्ग छोड़कर हम मैदान के रास्ते से हिमिस की ओर प्रस्थित हो गए। मेरे साथ दो बौद्ध साधु और थे। हम लोग वहाँ पहुँच गए थे। वहाँ के भिक्षु लोग बहुत ही प्रसन्न हे थे।

लद्दाख प्रदेश में लामा मुझको देखकर बहुत आदर के साथ हिमिस मठ दिखाने के लिये भीतर ले गए थे। लगभग पाँच-छः बीघा भूमि पर बहुत कुछ देखा था। डेढ़ सौ भिक्षु अपने-अपने अलग-अलग कक्षों में रहा करते हैं। ऊँचे घर में मठाधीश (खेम्पो) रहते हैं जो तिब्बती भाषा के अतिरिक्त थोड़ी-थोड़ी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा भी जानते हैं। उनसे तिब्बत और बौद्ध धर्म के बारे में वार्तालाप प्रारम्भ हुआ था। उनके मुख से आश्चर्यजनक समाचार मिला।

तिब्बत के लामाओं ने कहा कि "ईसा किसी प्रकार कबर से मुक्त होकर छिपते-छिपते काश्मीर में आये थे। वे तथागत बुद्ध या गौतम बुद्ध की तरह ईसा-बुद्ध नाम से प्रचरित थे। जीव बहुत जीवनों में साधना करते-करते बोधि-सत्त्व बन जाते हैं और वे साधना करते-करते आगे जाकर बुद्ध बन जाते हैं। ईसा इसी रूप से बुद्ध बन गये थे। ईसा बहुत शिष्यों के साथ काश्मीर के मठ में रहते थे। उनके दर्शन के लिये देश-देशान्तर से भक्त लोग आया करते थे और उनके शिष्य बनकर जीवनों को धन्य मानते थे। उस समय तिब्बत के रहने वाले, जिन्होंने ईसा को अपनी आँखों से देखा था और जिन वणिक् लोगों ने दण्ड प्राप्त ईसा को बध-स्तम्भ पर देखा था, उन्हीं के मुख से सुन-सुनकर ईसा की मृत्यु से तीन-चार वर्षों बाद सर्वप्रथम ईसा की जीवनी पाली भाषा में लिखी गई थी। न मालूम वह पुस्तक कहाँ है ? कोई कहते हैं कि ईसा योगी-संन्यासी के रूप में भारत के आबू पर्वत में भी आए थे।"

हिमिस गोम्पा से श्रीनगर- वहाँ से लेह, लिकिर गोम्पा, कार्गिल और शालीमार बाग होकर एक बौद्ध साधु के साथ हम श्रीनगर चले आए थे।

www.thearyasamaj.org

ऐतिहासिक

आर्यसमाज क्रान्तिकारियों की जननी है

-खुशहाल चन्द्र आर्य

आर्यसमाज क्रान्तिकारियों की जननी क्यों न हो, जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द स्वयं देशभक्त व क्रान्तिकारी थे, जिसने सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में काम किया था, उनका गुरु स्वामी विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु हेते हुए भी सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में एक विशेष भूमिका निभाई थी और विरजानन्द के गुरु स्वामी पूर्णानन्द भी एक अच्छे बड़े क्रान्तिकारी थे, उनके बारे में भी इतिहास बतलाता है कि उन्होने भी १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में काफी भाग लिया था। जिस संस्था के संस्थापक सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में केवल भाग ही नहीं लिया बल्कि अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ में यह लिखकर कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो यानि माता-पिता के समान सुखदायक हो, फिर भी उससे अपना स्वदेशी राज्य कहीं अच्छा होता है । इस उद्घोष से क्रान्तिकारियों ने बहुत प्रेरणा ली ।

बाल गंगाधर तिलक ने तो सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर यहां तक कह दिया कि आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । इसी प्रकार स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में यह भी लिखा है कि पारस पत्थर सुनने में तो आता है बाकी होता है या नहीं, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता । पारस पत्थर हो या नहीं परन्तु भारत प्राचीन काल में पारस पत्थर जरुर था, जिसके सम्पर्क में आने से विदेशी सोना यानि शिक्षित व सभ्य वन जाते थे । तीसरी घटना स्वामी जी की जीवनी में भी आती है कि अजमेर में लार्ड बुक ने स्वामीजी से पूछा कि आपको अपने प्रचार कार्य करने में किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं है तब स्वामी जी ने कहा कि अंग्रेजी राज्य में कोई तकलीफनहीं है । मैं अपना प्रचार अच्छी प्रकार से कर पा रहा हूँ । तब लार्ड ब्रुक ने कहा कि जब अंग्रेजी राज्य इतना अच्छा है तो आप जब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तब आप अंग्रेजी राज्य के विस्तार करने की भी प्रार्थना कर दिया करें । तब स्वामी जी ने कहा कि मैं तो नित्य ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ कि अंग्रेजी राज्य जल्दी से जल्दी नष्ट हो और भारत आजाद हो । यह उत्तर सुनकर लार्ड ब्रुक आवाक् रह गया और उसने इंग्लैण्ड में समाचार भेजा कि स्वामी दयानन्द तो कोई साधारण संन्यासी नहीं है, यह तो कोई बागी फकीर है, इसके ऊपर हमें कड़ी नजर रखनी चाहिए । इसके बाद स्वामी जी के ऊपर अंग्रेजों की कड़ी नजर रहने लगी और उनको मारने में भी अंग्रेजों का पूरा हाथ था। इससे सिद्ध होता है कि स्वामी जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् और महान् चरिज्ञवान् तो थे ही साथ ही क्रान्तिकारी विचार भी उनमें फूट-फूट कर भरे थे ।

जिस संस्था के संस्थापक स्वामी दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी हो तो वह संस्था कितनी क्रान्तिकारी होगी इसकी कल्पना स्वयं ही कर सकते हैं । भारत के सन् १९४२ के स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज ने जिस ढंग से बढ़-चढ़कर भाग लिया उसका वर्णन पट्टाभि सीतारमैय्या जो कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उसने स्वयं कांग्रेस का इतिहास लिखा है उसमें लिखते हैं कि सन् १९४२ की स्वतंत्रता की लड़ाई में आर्यसमाज सबसे ओ था और ८५ प्रतिशत आर्यसमाजी ही जेलों में थे । वैसे तो अनेकों आर्यसमाजी क्रान्तिकारी हुए हैं जिन्होने भारत माता की गुलामी की जंजीरों से निकालने के लिए अपना पूरा जीवन देश के लिए न्यौछावर कर दिया और अनेकों ने फाँसी के फन्दे को चूमा। उनमें भी पांच आर्यसमाजी क्रान्तिकारी मुख्य है जिनका नाम क्रान्तिकारियों की श्रृंखला में बहुत ऊंचे स्थान पर आता है - अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम.ए. । इनका अलग-अलग संक्षिप्त जीवन चरित्र इसी भांति है-

(१) रामप्रसाद बिस्मिल :- रामप्रसाद बिस्मिल एक बड़ा चरित्रवान्, बलिष्ठ, परम साहसी व देश के प्रति समार्पित भाव वाला क्रान्तिकारी था । इनका जन्म उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर नगर में सन् १८९७ में हुआ था। इनके पिताजी का नाम मुरलीधर था । आर्य समाज मंदिर इनके घर के पास ही था। इसलिए वे आर्यसमाज में जाने-आने लगे । फिर इनका सम्पर्क सोमदेव जी से हुआ और उनसे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे वे पक्के आर्यसमाजी हो गये । उनके पिताजी पक्के सनातनी थे, इसलिए ये बिस्मिल का आर्यसमाज में जाना पसन्द नहीं करते थे । एक दिन पिता ने कहा कि बिस्मिल ! या तो आर्यसमाज में जाना छोड़ दो या फिर घर छोड़ दो । बिस्मिल ने घर छोड़ दिया और आर्यसमाज में रहने लगा । कुछ दिनों पाद पिताजी ने घर पर बुला लिया । यह थी बिस्मिल की आर्यसमाज के प्रति भक्ति व आस्था । क्रान्तिकारियों के मुख्य कार्यों में काकोरी काण्ड को प्रमुखता दी जाती है कारण जिस समय क्रान्तिकारियों के पास धन का अभाव था । हथियार खरीदने में तकलीफ हो रही थी, तव काकोरी स्टेश पर सरकारी खजाने को लूटा था जो अति सफल रहा । इसी काण्ड के कारण बिस्मिल को गोरखपुर जेल में रखा गया और इसी जेल में फाँसी दी गई । बिस्मिल का आर्यत्व इसी में झलकता है कि बिस्मिल जेल में रहते हुए नित्य हवन करके ही भोजन करते थे और फाँसी के फन्दे को चूमने से पहले उसने स्तुति प्रार्थनोपासना को आठों मन्त्रों का पाठ किया था । इससे बढ़कर आर्यसमाजी होने का क्या सबूत हो सकता है ।

(२) श्यामजी कृष्ण वर्मा :- वर्मा जी एक बहुत ही तीव्र बुद्धि के होनहार नवयुवक थे । इनका जन्म ४ अक्टूबर १९४७ में हुआ था । इनके माता-पिता का निधन उनकी छोटी अवस्था में हो गया था । ये निर्धन परिवार के होने पर भी एक मेधावी छात्र होने से धनाढ्य लोगों को इनको अपने पास काम करने के लिए रखा और उनके पढ़ने क व्यवस्था भी उन्होने ही की । सन् १८७५ में महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए मुम्बई आये थे तब वर्माजी ने स्वामी जी के एक व्याख्यान से इतने

www.thearyasamaj.org

अधिक प्रभावित हे कि उन्होंने स्वामीजी को अपना गुरु मान लिया और वे केवल आर्यसमाजी ही नहीं बने बल्कि आर्यसमाज के उपदेशक भी बन गये । वर्मा जी हिन्दी, संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी के भी बड़े विद्वान् थे । मोनियर विलिमय के कहने पर महर्षि दयानन्द ने ही वर्मा जी को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ाने के लिए लन्दन भेजा था । स्वामी जी का श्यामजी वर्मा को लन्दन भेजने का उद्देश्य वेद प्रचार करना तथा क्रान्तिकारी भावना को फैलाने का भी था । वर्मा जी ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में रहते हुए एक इण्डिया हाउस की स्थापना सन् १९०५ में की जिसमें भारतीयों को क्रान्तिकारी बनने की शिक्षा दी जाती थी और वह क्रान्तिकारियों का निवास स्थल बन गया था । अंग्रेजी सरकार की सी.आई.डी. के अधिक पीछा करने से वर्मा जी वीर सावरकर को पूरी जिम्मेवारी दे कर स्वयं पेरिस (फ्रांस) १९०७ में चले गये । भारत के सभी क्रान्तिकारी नेता लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, एम.ए. आदि इसी इण्डियन हाउस में ठहरा करते थे और इसी में रहकर मदनलाल धींगड़ा ने विलिमय कर्जन वाइली को मारा था और उधमसिंह ने जनरल डायर जिसने जालियाँवाले बाग का हत्याकाण्ड करवाया था । उसके मर जाने से उधमसिंह ने जनरल डायर को प्रोत्साहन देने वाले माइकल ओडवायर को मारा था । वर्मा जी सन् १९१४ तक पेरिस में रहकर फिर स्वीदज़रलैण्ड होते हुए जेनेवा चले गये । वहाँ उनकी मृत्यु १ मई सन् १९३० में हो गई ।

क्रान्ति की आग सबसे पहले वर्मा जी ने ही लगाई थी इसलिए इनको क्रान्तिकारियों का गुरु भी कहा जाता है । गुजरात के मुख्यमंत्री आज के देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी ने इस क्रान्तिकारी की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करते हे इनकी आस्थियों को २४ अगस्त २००३ को भारतवर्ष की पावन धरती पर लाने का पुण्य कार्य किया है ।

(३) लाला लाजपत राय :- लालाजी एक पक्के आर्यसमाजी थे । उन्होंने ही कहा था कि महर्षि दयानन्द मेरे धर्म गुरु हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है । मैंने आर्यसमाज से ही देशभक्ति सीखी है । ऐसे महानुभाव का जन्म २८ जनवरी १८६५ में लुधियाना जिला में जगरांव ग्राम में पिता राधाकृष्ण, माता गुलाबी देवी के घर हुआ । लाला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । वे एक अच्छे ओजस्वी वक्ता, समर्पित समाजसेवी, सिद्ध लेखक, कुशल सम्पादक, कट्टर राष्ट्रवादी शिक्षाशास्त्री एवं निर्भीक क्रान्तिकारी नेता थे । उनके कारनामों को देखकर सभी लोग उन्हें पंजाब केसरी कहने लगे । लालाजी अपनी प्रारंभिक शिक्षा पास करके लाहौर आ गये । यहां पर उन्होंने गवर्मेंट कॉलेज में प्रवेश लिया तथा सन् १८८२ में एक-ए और कानून की परीक्षा भी साथ-साथ ही कर ली । यहाँ पर उनके सहपाठी हंसराज तथा पं. गुरुदत्त थे, उन्हीं के माध्यम से उनका सम्पर्क आर्यसमाज से हुआ ।

लालाजी वकालत पास करके रोहतक और हिसार में वकालत की, साथ ही राजनीति का कार्य भी करते रहे । वे सन् १८८८ में कांग्रेस के अधिवेशन में इलाहाबाद गये । इसके बाद वे १९०७ में पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ एक शिष्ट मंडल के सदस्य के रुप मे इंग्लैण्ड गये और वहां से अमेरिका चले गये । वहाँ अनेकों क्रान्तिकारियों से सम्पर्क किया । इससे पहले यहां १९०५ में जब बनारस में कांग्रेस अधिवेशन था, तब ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया, तब स्वाभिमानी लालाजी ने इसका डटकर विरोध किया । तभी से कांग्रेस में दो दल हो गये । एक गर्म दल जिसके नेता लालाजी, तिलक जी व सुरेन्द्रनाथ पाल और नरम दल के नेता था, गोपाल कृष्ण कोखले व गोविन्द रानाडे । इन्होंने आर्य समाज मुम्बई में स्थापना के बाद महिर्ष के स्वागत में पूना में बहुत बड़ा जुलूस निकाला था । उससे महर्षि की प्रसिद्धि बहुत बढ़ी । कांग्रेस में हुए दो दलो में गर्म दल का मानना था कि आजादी केवल गिड़गिड़ाने से नहीं मिलेगी, बल्कि उसके लिए बलिदान देना पड़ेगा । नरम दल वाले इसके विरोधई थे, परन्तु कांग्रेस में प्रभाव गरम दल वालों का ही था ।

पंजाब के १९०७८ वाले किसान क्रान्ति में लालाजी तथा अजीत सिंह (जो अमर शहीद भगतसिंह के चाचा जी थे) खुला साथ दिया, जिससे इन दोनों को ब्रह्मा की माण्डले जेल में अलग-अलग बन्दी बनाकर रखा । परन्तु जनता के रोष से उनको छः महीने बाद ही छोड़ दिया गया । जेल में लालाजी कई ग्रन्थों की रचना की जिनमें भारत का इतिहास (प्रथम भाग) महाराजा अशोक, शिवाजी, दि आर्य समाज, महर्षि दयानन्द, योगीराज कृष्ण आदि मुख्य हैं । माण्डले जेल से आने के बाद भारत में उनका भरपूर स्वागत हुआ और उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ और अधिक तीव्रगति से चलने लगी । इसके बाद लालाजी फिर इंग्लैण्ड गये, वहाँ आने का वीजा न मिलने से वहीं से जापान और अमेरिका आदि देशों में जाकर भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना प्रबल प्रयास किया । फिर देश में आकर गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया । परन्तु गाँधी तथा कांग्रेस की मुस्लिम संतुष्टि से रुष्ट होकर कांग्रेस छोड़ दी । फिर १९२४ में स्वामी श्रद्धानन्द व मालवीय जी के साथ हिन्दू महासभा की स्थापना की और इसका पहला अधिवेशन १९२५ में कलकत्ता किया जिसकी अध्यक्षता लालाजी ने की । इसके बाद ८ नवम्बर १९२७ में ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने भारत के भावी संविधान पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक आयोग का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष जॉन साइमन थे ।

इस आयोग में कोई भी भारतीय न होने से इस आयोग का भारत में विरोध हुआ और यह साइमन आयोग ३० अक्टूबर १९२८ को लाहौर पहुँचा । इसका विरोध करने के लिए लालाजी ने एक जुलूस निकाला जिसमें ''साइमन जो बैक'' के गगन चुम्बी नारे लगाए गए । सरकार ने १४४ धारा लगा दी फिर भी जुलूस आगे बढ़ता गया । इस शान्तिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन करते हुए इस जुलूस पर साडर्स ने क्रूरता से लाठी चलवा दी और लाला जी को लाठियों से इतना पीटा कि वे बुरी तरह घायल हो गये, तब लालाजी ने सिंह गरजना करते हुए कहा कि मेरे सीने पर लगी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में कील का काम करेगी और लालाजी का स्वर्गवास १७ नवम्बर १९२७ को हो गया । लालाजी की मृत्यु का बदला सरदार भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव ने ''साडर्स'' को गोली मार कर लिया ।

www.thearyasamaj.org

కోటలో పొగా

బహదూర్‌షా పాదుషాకు తల తిరగ సాగింది. మెదడు మొద్దుబారింది. నల్లమందు ఎంత దట్టించినా కాళ్లూ చేతుల వొణుకు తగ్గలేదు. ఏమి చేయదానికీ పాలుపోలేదు. ఫిరంగీలపై కత్తిఎత్తిన సిపాయిల్నీ, అలగా జనాల్నీ నమ్ముకుని ముళ్ల కిరీటం తగిలించు కోవటమా ? అంగ్రేజీల ప్రతీకారానికి భయపడి మానటమా ? మానితే వీళ్లు తన మానాన తనను ఉండనిస్తారా ? మానకపోతే తనను తెల్లవాళ్లు బతకనిస్తారా ?

సిపాయిలకు ఏదో చెప్పి తప్పించుకుని ఇవతలకొచ్చాక పాదుషా తన అంతరంగికుల్ని సంప్రదించాడు. రాజకుమారులైతే 'ఎందుకు ఆలస్యం' అన్నారు. మనకు ఉన్నదేమున్నది రేపు ఊడ్చుకుని పోవటానికి ? ఎలాగూ తెల్లవాళ్లు నీ పాదుషాగిరిని నీతోనే ఊడగట్టి, నీ అనంతరం మమ్మల్ని ఇక్కణ్నించి వెళ్లగొట్టాలనే చూస్తున్నారు కదా ? పాదుషాగా ఉండిమాత్రం ఇప్పుడు నీకున్న విలువేమిటి ? వీళ్లతో కలిసి అంగ్రేజీలను ఓ పట్టుపడితే తప్పేమిటి అన్నారు వాళ్లు.

హకీం అహ్సనుల్లా లాంటి సలహాదారులు మాత్రం తొందరపడవద్దన్నారు. "తెల్లవాళ్లతో విరోధం పెట్టుకుంటే మీకే ప్రమాదం. వాళ్ల శక్తిముందు మీరు నిలవలేరు. ఆమాటా ఈమాటా చెప్పి సిపాయిగాళ్లని ఇక్కడే ఆపి ఉంచుదాం. ఈలోపు ఆగ్రాలోని లెఫ్టినెంటు గవర్నరుకు ఒంటె సవారీ మీద కబురు పంపిద్దాం. వీళ్ల సంగతి అతడు చూసు కుంటాడు. మిమ్మల్నీ మెచ్చుకుంటారు" అని వాళ్ల ఆలోచన. పాదుషాకూ అదే బాగుందని పించింది. వెంటనే కదిలి ఇక్కడి పరిస్థితిని అదుపుచేయమంటూ ఆగ్రాకు హుటాహుటిన దూతను ఉరికించాడు. అలాగే ఢిల్లీ కంటోన్మెంటు అధికారులకూ కబురు పంపించాడు.

నగరంలో పోలీసు అధికారులను, సిపాయిలను చంపేసినా... పోలీసులూ పాలెస్ గార్డులూ సిపాయిలతో చేరిపోయినా... ఢిల్లీలో బ్రిటిష్ సైనిక దళాలు ఉన్నాయి కదా ? ఢిల్లీ నగరంలోనే బ్రహ్మాండమైన ఆయుధాగారం వాళ్లకి ఉన్నది కదా ? ఇక్కడింత తిరుగుబాటు జరుగుతూంటే వాళ్లు చూస్తూ ఊరుకుంటారా? భారీ ఫిరంగులూ, తుపాకులతో వచ్చి వాలరా ? మీరట్‌లో మహాశక్తిమంతమైన యూరోపియన్ పటాలాలే ఉన్నాయి కదా ? అవి చేతులు ముడుచుకుని కూర్చుంటాయా ? అక్కడ తిరగబడి వచ్చిన వారిని తరుము కుంటూ అవి ఈపాటికే ఇక్కడికి వచ్చేస్తుండాలి కదా ?... అని ఆలోచిస్తూ, ఏదో ఒకవైపు నుంచి బ్రిటిష్ సైన్యం దూసుకొచ్చి నడమంత్రపు తిరుగుబాటు పీడ విరగడ చేయకపోతుందా అని ఆశిస్తూ, అలా జరిగితే తెల్లవాళ్లతో తాను మంచివాణ్ణనిపించుకుని వారి ప్రాపకం తిరిగి ఎలా పొందాలా అని పథకాలు వేస్తూ ముసలి పాదుషా అరమోడ్పు కనులతో దిక్కులు చూస్తున్న సమయంలో...

తెల్ల సైన్యాలైతే పత్తాలేవు. కాని, దిక్కులు దద్దరిల్లేలా నూరు పిడుగులు పడ్డట్టు పెద్ద విస్ఫోటం వినిపించింది. దుర్భేద్యమైన ఢిల్లీ పాలెస్ గోడలే దాని తాకిడికి గజగజ వణికి ఊగిసలాడాయి. నగరంలో చాలా ఇళ్లు కుప్పకూలాయి. గుండెలవిసేలా చావుకేకలతో పరిసరాలు మారుమోగాయి. ఆకాశమంతటా ఎటు చూసిన దట్టమైన పొగలు కమ్మాయి.

ఏమైందో ఎవరికీ అర్థం కాలేదు.

అప్పుడు సమయం సాయంత్రం నాలుగు గంటలు.

కాసేపటికి తెలిసి వచ్చింది. అది నగరం మధ్యలోని బ్రిటిష్ ఆయుధాగారం పేలిపోయిన చప్పుడు !

బ్రిటిష్ అధికారుల నుంచి అందుతుందను కున్న సాయంకోసం అంగలారుస్తూ పాదుషా కిందా మీదా పడుతున్న సమయంలో విప్లవ సిపాయిలు గుర్రాలు కట్టేసి కాళ్లు జారజాపి ఖాళీగా కూచోలేదు. పాదుషా దయతలిచే వరకూ ఊరకుండక తమ పని తాము కానిచ్చారు. కొంతమంది పాలెస్‌ను కాపలా కాస్తుంటే కొంతమంది ఢిల్లీ సైనిక పటాలాల చెంతకు వెళ్లారు. కొంతమంది ఆయుధాగారం వైపు మళ్లారు.

నగరానికి రెండు మైళ్ల వెలుపల రాజపూర్ గ్రామంలో రిడ్జిమీద (ఇప్పుడు యూనివర్సిటీ కాంపసు ఉన్నచోట) ఢిల్లీ కంటోన్మెంటు ఉండేది. దానికి అధికారి బ్రిగేడియర్ గ్రేవ్స్. తిరుగుబాటుదారులు వచ్చిపడ్డ కబురు అతడికి కాస్త ఆలస్యంగా తెలిసింది. తెలియగానే, తన దగ్గరి 38, 54, 74 పటాలాలను, నేటివ్ శతఘ్ని దళాన్ని సమావేశపరిచి పరిస్థితి తీవ్రత వివరించాడు. ఏదిఏమైనా క్రమశిక్షణ గల సైనికులుగా పై అధికారుల ఆజ్ఞలు పాలించి, తమకు అన్నం పెడుతున్న బ్రిటిష్ మహా సామ్రాజ్యానికి మంచిపేరు తేవలసిన అవసరాన్ని ఆయన నొక్కినొక్కి చెప్పాడు. సిపాయిలు మొగాలు చూసుకున్నారు. బ్రిగేడియరు దొర ఎంత హైరాణ పడ్డా వారిలో చలనం లేదు. మీరట్‌లో వలె ఢిల్లీలో ప్రత్యేకంగా యూరోపియన్లతో కూడిన పదాతి, ఆశ్విక దళాలు లేవు. పై ఎత్తున బ్రిటిష్ అధికారులు అజమాయిషీకి ఉన్నప్పటికీ దిగువ, మధ్యస్థాయి సైనికులందరూ భారతీయులే.

అసలే - వారు కొద్దిరోజులుగా లోలోన దహించుకుపోతున్నారు. వారిలోని సిపాయి ఆఫీసర్లలో కొందరు మీరట్‌లో జరిగిన కోర్టు మార్షలులో పాల్గొని వచ్చారు. తమందరినీ మత భ్రష్టుల్ని చేయటానికి తెల్లవారు తెచ్చిన చండాలపు తూటాలను ముట్ట నిరాకరించిన నేరానికి తమ తోటివారిని క్రూరమైన కోర్టు మార్షలుకు గురిచేయటం, అందులో తాము సైతం విధిలేక పాలుపంచుకొనవలసి రావటం వారికీ, దారి ముఖతః అక్కడి సంగతులు విన్న మిగతా సిపాయిలకూ గుండెలు మండించినిది. ఇది చాలదన్నట్టు సరిగ్గా అదేరోజు ఉదయం బ్రిగేడియర్ గ్రేవ్స్ సిపాయిలందరినీ పిలిచి బారక్‌పూర్‌లో మంగళ్‌పాండేకు సహకరించిన జమాదారు ఈశ్వరీ పాండేపై కోర్టు మార్షల్ ప్రొసీడింగ్సును పెరేడ్‌లో చదివి వినిపించాడు. స్వామి ద్రోహానికి పాల్పడ్డ ఆ దుర్మార్గుడికి ఎంత కఠినంగా ఉరిశిక్ష వేసిందీ వింటే మిగతా సిపాయిలకు భయం పుట్టి, తల ఎగరేయకుండా బుద్ధిగా ఉంటారని బ్రిగేడియర్ దొర ఊహించాడు. కాని - ఎదురు తిరిగిన పాండేను వీరుడిగానూ, అతడిని ఉరికంబం ఎక్కించిన విదేశీయులను దుష్టాత్ములుగానూ సిపాయిలు తలిచారు.

తమ సాటివాడికి జరిగిన అన్యాయానికి

www.thearyasamaj.org

రగిలిపోతూ బ్రిటిష్ దొరల దాష్టీకానికి తలఒగ్గ వలసి వచ్చిన తమ దురవస్థకు సిపాయిలు బాధపడుతున్న సమయంలో దేవుడు పంపించినట్టు సరిగ్గా అదేపూట మీరట్ వాళ్లు వచ్చి ఢిల్లీ పాలెస్‌ను ఆక్రమించారన్న వార్త తెలిసి సిపాయిలందరికీ ప్రాణం లేచి వచ్చింది. వాళ్ళు ఇవాళ ఇక్కడికి రావచ్చని గుర్రపు బండ్ల మీద అడ్వాన్సుగా వచ్చిన సిపాయిల ద్వారా మీరట్ నుంచి ముందురోజు రాత్రే వీరికి కబురు అందింది. అంతా కలిసి ఢిల్లీలో చేయబోయే తిరుగుబాటు కోసమే అందరూ ఎప్పుడెప్పుడా అని ఎదురు చూస్తున్నారు. ఇక ఇంగ్లీషువాడు ఏమి చెప్పినా వినే పరిస్థితిలో ఎవరూ లేరు. ఇన్నాళ్లూ తమను అణచిపెట్టి, తమ దేశీయులపైనే తుపాకులు ఎత్తించి, తమను నానా క్షోభపెట్టిన విదేశీయులపై కసి వారిలో అంతకంతకూ పెరిగిపోయింది.

పాలెస్‌లో గొడవ సంగతి తెలియగానే బ్రిగేడియర్ గ్రేవ్స్ సిపాయిలకు క్రమశిక్షణ క్లాసు తీసుకుని, 54వ పటాలాన్ని కర్నల్ రిప్లే నాయకత్వంతో ఎర్రకోట కాశ్మీర్ గేటు దగ్గరికి ఉరికించాడు. ఏం లాభం ? కర్నల్ రిప్లే 'ఫైర్' అన్నా సిపాయిలు విప్లవకారులపై ఫైర్ చెయ్యలేదు. పైగా తమ కమాండరునూ, తమ పైఅధికారులనూ తిరుగుబాటుదారులు నరికి వేస్తూంటే చూస్తూ ఊరుకొని, తిరుగుబాటు శ్రేణుల్లో చేరిపోయారు. 74వ పటాలాన్నిచ్చి మేజర్ అబ్బాట్‌ను రంగంలోకి పంపినా ప్రయోజనం లేకపోయింది. మేజర్‌గారు ఎంత నీతిబోధ చేసినా సిపాయిలు ఎదురుతిరిగి అవతలి పక్షం సోదరులతో చేరిపోయారు.

ఇక మిగిలింది భారీ ఆయుధాగారం. పదివేల రైఫిళ్లు, తొమ్మిది లక్షల తూటాలు, వందల ఫిరంగులు అందులో ఉన్నాయి. దాని కాపలాకు ఉండటానికి పెద్ద బలగమే ఉంది. కాని తిరుగుబాటుదారులు వచ్చి పిలవగానే అక్కడి సిపాయిలూ పొలోమంటూ వారితే చేరిపోయారు. అక్కడ నిల్వచేసి ఉన్న మందుగుండు సామగ్రి కాస్తా కూస్తా కాదు. మూడు వేల పీపాల పైమాటే. అది కనుక అంటుకుంటే మొత్తం ఢిల్లీ నగరమే భస్మీపటలం అయ్యేదే. ఐతే లోపలి సిపాయిలు తెలివిగా వ్యవహరించి, ముందు చూపుతో యాభై వంద పీపాలు మినహా మిగతా అంతటినీ బ్రిటిష్ ఆఫీసర్ల కళ్లుగప్పి మూడు మైళ్ల దూరంలోని సురక్షిత స్థలానికి చప్పున చేరవేశారు.

అంతలో కోట నుంచి వచ్చిన సిపాయిలు ఆయుధాగారాన్ని చుట్టుముట్టి పాదుషా పేరు చెప్పి, లెఫ్టినెంట్ విల్లోబీని లొంగిపోవలసిందిగా హెచ్చరించారు. ఆ అధికారి మొండిఘటం. తన వాళ్లనుకున్న సిపాయిలు అక్కరకొస్తారన్న ఆశలేదు. మిగిలింది తాను గాక ఎనిమిది మంది బ్రిటిష్‌వాళ్లు. లోపలా, బయటా ఉన్న శత్రువులను తట్టుకుని నిలబడటం తమవల్ల అయ్యేట్టు కనిపించలేదు. ఈలోపు కోటలోని వాళ్లు తాళ్లు, నిచ్చెనలు పట్టుకొచ్చి, ఆయుధాగారం గోడలను లంఘించి లోపలికి దిగడానికి సన్నాహాలు మొదలెట్టారు. లెఫ్టినెంట్ విల్లోబీకి పరిస్థితి చేజారిపోయిందని అర్థమైంది. చచ్చినా సరే ఆయుధాలను ఒప్పగించేది లేదనుకున్నాడు. మందుగుండు సామగ్రిని, ఫిరంగులను, పేలుడు పదార్థాలను అన్నిటినీ అతడు ముందే అనుసంధానం చేయించి ఉంచాడు. పోగాలం ఆసన్నమైందనుకోగానే మొత్తం మందుపాతరకు అగ్గి అంటించమన్నాడు.

అదీ - ఎర్రకోటను, ఢిల్లీ నగరాన్ని అదరగొట్టి భయభ్రాంతుల్లో ముంచెత్తిన చప్పుడు.

ఒక్కరూ ప్రాణాలతో బయటపడలేక పోవచ్చని తెలిసీ విల్లోబీ పేలుడుకు ఆజ్ఞ ఇచ్చాడు. మిగతా ఎనిమిది మంది యూరోపియన్లు కఠోర క్రమశిక్షణతో ఆజ్ఞను పాలించి, మృత్యువును కౌగిలించుకోవటానికి సిద్ధపడ్డారు. ఇది *glorious deed of heroism* (*ఉజ్వలమైన శౌర్యం*) అని స్వతంత్ర భారత ప్రభుత్వం పనుపున 1857 చరిత్ర రాసిన **సురేంద్రనాథ్ సేన్** అభివర్ణించాడు. (మీరట్ వాళ్లు వచ్చిపడిన సమయంలో తిరుగుబాటు చరిత్రగల 38వ రెజిమెంటు పాలెస్ గేట్ల కాపలా డ్యూటీలో ఉండటం దురదృష్టకరమనీ ఆ 'జాతీయ' చరిత్రకారుడే బోలెడు బాధపడ్డాడు కూడా !)

ఇంగ్లీషు వాళ్ల కళ్ళతో చూసినప్పుడు ఆయుధాగారం ఆత్మాహుతి నిస్సందేహంగా అద్భుత శౌర్యమే. కాని ఆ సమయంలో చిక్కుబడ్డ బ్రిటిష్ వాళ్లు అంతకుమించి చేయగల్గిందీ లేదు. చేతులెత్తేసినా అప్పుడున్న మనఃస్థితిలో సిపాయిలు వాళ్లని చంపకుండా వదులుతారన్న ఆశ లేదు. అంతకీ ఆజ్ఞను పాటించి మందుపాతర పేల్చిన స్కల్లీ, అతని నలుగురు సహచరులు మాత్రమే ఆత్మాహుతి అయిపోయారు. ఆర్డరు వేసిన విల్లోబీ, అతనికింది ముగ్గురు ఆఫీసర్లు అదృష్టవశాత్తూ తప్పించుకుని ప్రాణాలతో బయటపడ్డారు. అంటే తెల్లవాళ్లలో నికరంగా మరణించింది ఐదుగురే. మరి విప్లవకారుల పక్షానో ?

The loss of the assaitants was far more severe. It has never, I believe been mathematically computed, but it may be reckoned by hundreds. (*దాడి చేసిన వారి వైపు నష్టం ఇంకా చాలా తీవ్రమైనది. ఇంతమంది అని ఎవరూ లెక్కవేయలేదనుకుంటా. కాని మృతుల సంఖ్య వందలలోనే ఉంటుంది*) అని ***The Indian Mutiny of 1857*** గ్రంథం (55వ పేజీ)లో **G.B. Malleson** దాచకుండా చెప్పాడు. ఇంగ్లీషు మేధావులకు వారి జాతి పట్ల ఉన్న మమకారం, ఆత్మీయత మన చరిత్రకారులకు, మేధావులకు మన జాతిపట్ల లేదు కనుక ఆనాడు ఆయుధాగారాన్ని స్వాధీనపరచుకోవటానికి ప్రాణాలు బలిపెట్టిన భారతీయులు ఎవరు, ఎందరు అన్నది నేటికీ అజ్ఞాతంగానే మిగిలింది. పాదుషా పేరు లాంఛనంగా చెప్పుకున్నా వారందరినీ ముసలి పాదుషా బలవంతపెట్టి అక్కడికి తరమలేదు. దివాణంలో హాయిగా తిని తొంగుంటే వారి వద్దనేవారు ఎవరూ లేరు. ఎవరు ఏమి చేయాలో, ఎక్కడికి కదలాలో నిర్ణయించే సెంట్రల్ కమాండు అన్నదే వారికి లేదు. నాయకుడంటూ ప్రత్యేకంగా లేకపోయినా ఎవరికి వారే కదిలి వెళ్లి, తాళ్లు, నిచ్చెనలు తెచ్చి గోడలు దూకి బ్రిటిష్ ఆయుధాగారాన్ని వశపరచుకునే యత్నంలో వందల సంఖ్యలో నేలకొరిగారంటే ఆ ఆత్మార్పణ ఆషామాషీ విషయమా ? వారి బలిదానం ఆంగ్లేయుల శౌర్యానికి తీసిపోయేదా ?

ఆయుధాగారం పేలిపోవటంతో కంటోన్మెంటులో మిగిలిన ఆంగ్లేయులకూ గుండెలవిశాయి. కోట గేట్ల దగ్గరికి తరలించిన పటాలాల వారు ఎదురు తిరిగి శత్రుపక్షంలో కలిసిపోయినా కంటోన్మెంటులో ఉన్నవారు మెయిన్ గార్డును సాయంత్రందాకా ఎలాగో కాపాడుకోగలిగారు. ఆయుధాగారం పేలిన విస్ఫోటం వినబడగానే అక్కడి 38వ పటాలం సిపాయిలు వీరావేశంతో ఊగిపోయి నేరుగా తమ ఆఫీసర్లపైనే కాల్పులు మొదలెట్టారు. దాంతో తమ జాతి అభిజాత్యపు సహజ దర్పంతో నేటివ్‌లను ఎలాగైనా కంట్రోలు చేయగలమని మిగిలిన చివరి ఆశ కూడా అడుగంటి, తెల్లవారు తెల్లబోయి ప్రాణభయంతో పరుగులు పెట్టారు. స్త్రీలను,

www.thearyasamaj.org

పిల్లలను వెంటేసుకుని ఉన్నవారు ఉన్నపళాన సురక్షిత స్థలాన్ని వెదుక్కుంటూ చెల్లా చెదురయ్యారు. ఆ సంకట సమయంలో పద్ధతి ప్రకారం తన సేనను ఉపసంహరించి వెనక్కి మరలించుకుపోయే దక్షత మోపెడు మెడల్సు ధరించిన ఏ తెల్ల ఆఫీసరుకూ లేకపోయింది.

సైన్యాధికారుల గతే ఇలా ఉంటే ఊళ్ళోని మామూలు యూరోపియన్ పౌరుల అవస్థ మరీఘోరం. శాంతిభద్రతలు భగ్నమైన పరిస్థితి ఆసరా చేసుకుని అల్లరిమూకలు, అసాంఘిక శక్తులు విజృంభించాయి. మనుషులలోని మృగత్వం కోరలు చాచింది. యూరోపియన్లు, ఆంగ్లో ఇండియన్లు ఎక్కువగా నివసించే దర్యాగంజ్ ప్రాంతంలో ముష్కర మూకలు ఇల్లిల్లూ గాలించి, కనపడ్డ క్రిస్టియనునల్లా నరికి వేశారు. తెల్లవాళ్ల ఇళ్లు, ఆస్తులు తగలబెట్టారు. ఢిల్లీ బ్యాంకును ముట్టడినిచారు. మేనేజర్ బెరెస్‌ఫోర్డు, ఆయన కుటుంబం ఎంతగా పోరాడినా దాడికి నిలువరించలేకపోయారు. దుండగులు చొరబడి లోపలి వారిని చంపేసి, బ్యాంకును లూటీ చేసి నిప్పంటించారు. యూరోపియన్లు నడిపే స్థానిక పత్రిక **ఢిల్లీ గజెట్** కార్యాలయం కూడా అలాగే ధ్వంసమైంది. ఇంగ్లీషు చర్చి బుగ్గి అయింది. దుండగులు తెగబడి అంతటా గాలించి, తెల్లతోలు వాళ్లను వెంటాడి వేటాడసాగారు. ప్రాణాపాయంలోని కొద్దిమందిని ఇరుగు పొరుగు వారు దాచిపెట్టి ఆదుకున్నారు. చీకటి పడే సమయానికి ఢిల్లీ వీధుల్లో తెల్లవాళ్లంటూ ఎవరూ మిగల లేదు. అటు కంటోన్మెంటులోని వాళ్లూ, ఇటు సివిలియన్లూ భార్యాబిడ్డల్ని తీసుకుని ఎవరికి తోచినట్టు వారు నగరం వదిలి పారిపోయారు. దారిలో నానా అవస్థలు పడి, గూండాల గుంపులను, క్రూర మృగాలను తప్పించుకుంటూ, మానవత్వం గల సాధారణ జనం సాయంతో కొంతమంది కర్నాల్‌కు పోయారు. కొందరు ఆగ్రా చేరారు. మరికొందరు మీరట్ దారిపట్టారు. పరారవుతున్న వారిని విప్లవకారులు వెంటాడి, వేటాడి ఉంటే తెల్లవాళ్లలో ఒక్కరూ ప్రాణాలతో మిగిలేవారు కాదు. కాని తిరుగుబాటుదారులు ఎవరూ అలాంటి అమానుష కృత్యాలకు పాల్పడలేదు. సిపాయిలు గాని, సామాన్య జనం గాని బ్రిటిష్ మహిళలపై అత్యాచారాలు చేసిన దాఖలాలు లేవు.

చీకటి పడ్డా, రాత్రి పొద్దుపోయినా తెల్లవాళ్ల

సార్వదేశిక్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ ఆధ్వర్యములో

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. –తెలంగాణ సౌజన్యంతో

జాతీయ స్థాయిలో, హైదరాబాదులో

జాతీయ విద్వాంసుల మరియు బుద్ధి జీవుల ప్రతినిధి సమ్మేళనము

2వ ఫిబ్రవరి నుండి 5వ ఫిబ్రవరి 2017 వరకు

ధార్మిక, సామాజిక మరియు జాతీయ స్థాయి సమస్యలపైన చర్చ మరియు దిశా–నిర్దేశము

ఆర్య సమాజమును ప్రతి సందర్భములో ఒక బలమైన సంస్థగా తీర్చిదిద్దటానికి సంకల్పము

జాతీయ స్థాయిలోని వరిష్ఠ మహాత్ములు, విద్వాంసులు, ప్రొఫెసర్లు, బుద్ధి జీవులు, గురుకులాల ఆచార్యులు, భజనోపదేశకులు, పురోహితులు మరియు ఆర్య నాయకులు, ప్రముఖులు ఈ సమ్మేళనములో పాల్గొనున్నారు. మీరందరూ కూడ అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని సమ్మేళనమును దిగ్విజయము కోరుచున్నాము.

(ప్రొ. విఠ్ఠల్ రావు ఆర్య)
మహామంత్రి
సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ
ప్రధాన్, ఆ.ప్ర. సభా ఆంధ్రప్రదేశ్–తెలంగాణ. సెల్ : 09849560691

(స్వామి ఆర్యవేశ్)
ప్రధాన్
సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ
సెల్ : 9013783101

జాడ లేకపోయేసరికి ఇక వారు వచ్చేది లేదు; తిరుగుబాటును అణచేది లేదు అని పాదుషాకు, ఆయన పరివారానికి అర్థమైంది. తెల్లవాళ్లు ఢిల్లీ వదిలి పారిపోయారని తెలియడంతో ఇక తమదే రాజ్యమన్న సంగతి వారికి మెల్లిగా బోధపడింది. మరికాసేపు బెట్టుచేసి, బతిమాలించుకున్న తరవాత "మీరే మా పాదుషా, ఒప్పుకుని మమ్మల్ని ఏలండి. లేదా మా దారి మేము చూసుకుంటాం" అన్న సిపాయిల బెదిరింపులాంటి అభ్యర్థనకు కొడుకుల ఒత్తిడి మీద, ముద్దుల భార్య జీనత్‌మహల్ ప్రేరేపణపైన బహదూర్‌షా సరేనన్నాడు. 'నేను చక్రవర్తిని కాదు. పేద పకీరును. మీకు జీతాలివ్వటానికి కూడా నా దగ్గర డబ్బులేదు' అని పాదుషా మొహమాట పడితే 'మిమ్మల్ని జీతం కూడా అడగం. అన్ని సంగతులూ మేమే చూసుకుంటాం !' అన్నారు సిపాయిలు.

ఇంకేం ? లార్డ్ ఎలన్‌బరో గతంలో సెల్లారులో పడవేయించిన వెండి సింహాసనాన్ని అప్పటికప్పుడు బయటికి తీసి దుమ్ముదులిపి దివాన్ ఇ ఖాస్‌లో పాదుషా వారిని సగౌరవంగా కూచోబెట్టి అందరూ సలాములు చేశారు.

ఆరోజు అర్ధరాత్రి పాదుషాకు గౌరవ సూచకంగా కోటలో 21 తుపాకులు మోగాయి.

www.thearyasamaj.org

బూజుపట్టిన రాజు

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

రాజ్యం లేని రాజ్యానికి రాజుకాని రాజు ! పేరుకు పాదుషా ! ఉండేది ఎర్ర కోటలో. ధరించిన బిరుదు సమస్త విశ్వానికి ప్రభువు అని ! విశ్వాన్నేలే మాట దేవుడెరుగు.

చక్రవర్తి గారి అధికారం కోట బయ దమ్మిడికీ కొరగాదు

ఆయన పూర్వీకులు కొన్ని శతాబ్దాలపాటు యావద్భారతాన్ని దుర్నిరీక్ష్యంగా ఏలారు. అప్పట్లో మొగల్ పాదుషా పేరు చెబితే ఎంతటి వాడయినా గడగడలాడేవాడు. పాదుషా కనుసైన చేస్తే చాలు మనుషుల ప్రాణాలు గాలిలో కలిసేవి. మహాసంస్థానాలే మట్టి కొట్టుకుపోయేవి. ఆ ప్రాభవమూ, దాని వెనుక వచ్చిన సిరీ సంపదా కరిమింగిన వెలగలా ఏనాడో హరించుకు పోయాయి. ఢిల్లీ నగరం నడిబొడ్డున యమునా నది ఒడ్డున వెయ్యి గజాల పొడవు, ఆరు వందల గజాల వెడల్పున ఐదున్నర మైళ్ల చుట్టుకొలత గల లాల్‌ఖిలా ఒక్కటే గత వైభవానికి గురుతుగా పాదుషాలకి మిగిలింది. ఆ కోటకి ప్రధానాకర్షణ అనదగ్గ దివాన్-ఇ-ఆమ్‌లో ప్రజలకు చక్రవర్తి దర్శనమిచ్చే పాలరాతి చలవ వేదిక ఇప్పటికీ ఉంది. వెల లేని ఆభరణాలు పొదిగి, తెల్లని పాలరాతితో రాజ ప్రముఖులతో అంతరంగిక మంతనాల నిమిత్తం అద్భుత కళాత్మకంగా కట్టిన దివాన్-ఇ-ఖాస్ మందిరం కూడా పాత జ్ఞాపకాలు నెమరేసుకుంటూ అక్కడే ఉంది. కాని అక్కడ ఉండాల్సిన నెమలి సింహాసనాన్ని 1739లోనే నాదిర్షా లూటీ చేసి, దానికి పొదిగిన వెలలేని వజ్రాలనూ, రత్నాలనూ, బంగారు తొడుగులను వొలిపించి పర్షియా పట్టుకుపోయాడు. ఇప్పటికి మిగిలింది చలవరాతి పీఠం మాత్రమే. "భూమి మీద స్వర్గమంటూ ఉంటే ఇదే; ఇదే; అన్న సుప్రసిద్ధ శిలా శాసనం మాత్రం చూసేవారికి నవ్వొచ్చేలా దానిపై చెక్కు చెదరక నిలిచింది !

పెద్దపెద్ద స్నానశాలలు, లంకంత అంతఃపుర మందిరాలు, రంగ మహాలులు, నేలమాళిగలు, విలాస గృహాలు వెనకటి కాలంలో లాగే ఉన్నాయి. కాని ఒకప్పటి ఐశ్వర్యం కనుమరుగై దరిద్ర దేవత వికృత తాండవం సర్వత్రా ద్యోతకమవుతుంది. ఖరీదైన తివాచీలు, మట్టి కొట్టుకుపోయిన చింకి చాపలు పక్క పక్కనే కనిపిస్తాయి. దంతం, వెండి కుర్చీల మీద మట్టి పేరుకున్న చిరుగు పాతలు కప్పి ఉంటాయి. ఎక్కడ చూసినా దుమ్ము, ధూళి, గబ్బిలాల వాసన.

గుర్రం గుడ్డిదైనా దాణాకు లోటు లేదన్నట్టు చక్రవర్తికి పని లేకపోయినా, చిల్లి గవ్వ రాబడి లేకపోయినా, అతడి మీద ఆధారపడి బతికే పరివారాలకు కొదవ లేదు. భార్యలు, ఉంపుడుగత్తెలు, వారి బిడ్డలు, చుట్టాలు, పక్కాలు, వారి సేవకులు, కాపలా కాసే కొజ్జాలు, బాహీ గార్డులు, ముసలి పాదుషాకు మగతనాన్ని వృద్ధి చేయించే మందులు మాకులు తయారుచేసేవాళ్లు. మాదక ద్రవ్యాల్లో, విష ప్రయోగాల్లో ఆరితేరిన వాళ్లు, సవతుల మధ్య తంపులు పెట్టి చేతబడులు చేయించేవాళ్లు, వినోదార్థం కుస్తీలు పట్టే వాళ్లు, విదూషకులు, పాటగాళ్లు, ఆటగత్తెలు, వారిని ఆశ్రయించుకుని ఉండే దొంగలు, భటా చోరులు... ఇలా అమాంబపతులన్నీ కలిపి పన్నెండువేల దాకా పరివారజనం కోటలో ఉండేది. వీరి తిండి, తిప్పలు, పోషణ ఖర్చులన్నీ పాదుషాకు కంపెనీవారు ఇచ్చే నెలకు లక్ష రూపాయల భరణం మీదే వెళ్లాలి.

నాదిర్షా, అహ్మద్‌షా అబ్దాలీలు కోటను కొల్లగొట్టి విలువైన వస్తువులన్నీ వొలుచుకు పోయాక, షా ఆలం పాదుషాను గులాం ఖదీర్ సొమ్ముకోసం పీడించి రాజసభలోనే గుడ్లు పీకేసిన తరువాత మొగలాయీ సింహాసనమంటే ఎవరికీ లెక్కలేకుండా పోయింది. దానికి తోడు షా ఆలం చక్రవర్తి రాబర్ట్ క్లయివ్ మాయలోపడి, బెంగాల్‌కు దివానీ హక్కులను కళ్లు మూసుకుని రాసిచ్చి క్లయివ్‌ను వజీరుగా నియమించడంతో చరిత్రాత్మక మొగల్ సామ్రాజ్యం తన గొంతును తానే నులుముకున్నట్టయింది. ఆ తరవాత కాలంలో మరాఠాలు విజృంభించి పాదుషాను తమ రక్షణలో పదిహేనేళ్లు అట్టేపెట్టు కోగలిగారు. కాని 1804లో వెల్లస్లీ ప్రభువు పనుపున లార్డ్ లేక్ మరాఠాలను ఓడించి షా ఆలంను తిరిగి తెల్లవాళ్ల వంటింటి కుందేలును చేశాడు. అప్పటికి ఈస్టిండియా కంపెనీ వాళ్లకి భారతదేశానికి నేరుగా ప్రభువలయ్యే ఉద్దేశం లేదు. చక్రవర్తిని నామకః నిలబెట్టి, అతడి పేరు మీద వ్యవహారాలు నడిపి, కావలసిన రాయితీలన్నీ రాబట్టి, సర్వాధికారాలు నెమ్మదిగా లాగేయాలన్నదరీ వారి ఎత్తుగడ. చక్రవర్తి రాజ్యాధికారం అఖండంగా, నిరాఘాటంగా వెలిగిపోతున్నట్టూ, ఆయన సర్వం సహాధిపత్యానికి తాము పరమ విధేయులైనట్టూ ప్రజలకు భ్రమ కొలపడానికి వారు నానా నక్క వినయాలు కనపరిచేవారు. ఈద్, బక్రీద్, నవ్‌రోజ్, పాదుషా పుట్టిన రోజు సందర్భాల్లో గవర్నర్ జనరల్ పనుపున బ్రిటిష్ రెసిడెంటో, సేనాధిపతో, చెప్పులు విప్పి వట్టికాళ్లతో వినయంగా దర్శించి పాదుషాకు నజరానాలు సమర్పించి వెళ్లేవారు.

భారతదేశాన్ని ఆక్రమించి నేరుగా పాలించే ఉద్దేశం ఆ సమయానికి కంపెనీ వారికి లేనంత మాత్రాన అసలలాంటి ఉద్దేశమే వారికి లేనట్టు కాదు. ఎప్పటికైనా ఈ తెరచాటు ఏర్పాట్లు వదిలేసి, కీలుబొమ్మలను పక్కనపడేసి బాహాటంగా తామే పెత్తనం చేయవలసి రావచ్చునని వెల్లస్లీ ముందు ఊహించాడు. అలాంటి పరిస్థితి కనుక వస్తే... మొగల్ పాదుషాను ఎర్రకోటలో ఉండనివ్వటం తమకు తలనెప్పిని తెచ్చిపెట్టగలదనీ, పాదుషా పాత ప్రాభవం ఇంకా ఏదో మిగిలి ఉన్నట్టు ప్రజలకు భ్రమగొలపడం వల్ల జనానికి పాత విధేయతలు చెక్కు చెదరక సార్వభౌమాధికారానికి ప్రతీకగా పాదుషాను పరిగణించే ప్రమాదం ఉన్నదనీ, దానివల్ల మునుముందు పాదుషాకు వెర్రి ఊహలు పెరిగి తల ఎగరేయవచ్చుననీ వెల్లస్లీ భయపడ్డాడు. అలాంటి ముప్పును మొగ్గలోనే తుంచెయ్యటం కోసం షా ఆలం పాదుషా చేత ఎర్రకోట వదిలిపెట్టించాలని గట్టి ప్రయత్నం చేశాడు. మీ బసకు బీహార్‌లో మంచి స్థలం చూపిస్తానని బేరం కూడా పెట్టాడు. కాని చక్రవర్తి మండిపడి, తాను బతికుండగా తనను ఆ కోట నుంచి ఎవరూ కదపలేరని గర్జించాడు. అతడి పట్టుదల చూసి వెల్లస్లీ వెనక్కి తగ్గాడు. అప్పటికి ఇంకా మరాఠాలతో, ఆఫ్ఘాన్లతో, ఫ్రెంచి వారితో నానాగొడవగా ఉన్నందున అని తేలకుండా కొత్త తలనెప్పిని తెచ్చుకోవటమెందుకని గుర్రాన్ని కట్టేశాడు.

ఐనా తమకు అక్కర తీరాక ఇంకా మొగల్ పాదుషా నామమాత్రపు చక్రవర్తిత్వాన్ని కొనసాగించటం ఎప్పటికైనా తమకు పక్కలో బల్లెం కాగలదన్న అనుమానం తెల్లదొరలను తొలుస్తూనే ఉంది. ఇండియాలో అతి ప్రధానమైన రాజవంశాలను వాటి పూర్వ అధికార కేంద్రాలకు దూరంగా విసిరేసే పని క్రమంగా పూర్తయింది. ఒకప్పుడు తిరుగులేని ప్రాభవం చలాయించిన మరాఠా మహా సామ్రాజ్యానికి చోదకశక్తి అయిన పీష్వాగిరీ రెండో బాజీరావు అసమర్థ నిర్వాకంలో సర్వభ్రష్టమై, తెల్లవారు ఉదారంగా ఇచ్చిన పెన్షనుతో ఉత్తరాదిన బిథూరువల్లెలో దిక్కూమొక్కూ లేకుండా కాలం వెళ్లదీస్తోంది. టిప్పుసుల్తాన్ వారసులను వెల్లూరు నుంచి కలకత్తాకు విసిరేసే పని పూర్తయింది. పంజాబ్ సింహం రంజిత్‌సింగ్ కుమారుడు బ్రిటిష్ దీవుల్లో ప్రవాస జీవితం గడుపుతున్నాడు. బెంగాల్, కర్ణాటకలను ఇంగ్లీషు పులుసులో కలిపేసుకుని మరాఠా, సిక్కు ప్రాభవాలను అణచేసిన తరవాత ఇక మిగిలిన మొగల్ పాదుషాకూ సున్నంబొట్లు పెట్టి కోట నుంచి సాగనంపేస్తే ఒక పని అయిపోతుంది కదా అని దొరలు తలిచారు. సమయం కోసం వేచి ఉన్నారు.

ఆ కాలానికి బహదూర్‌షా పాదుషాగా ఉన్నాడు. షా ఆలం కుమారుడు అక్బర్‌షాకి అతడు పెద్ద కొడుకు. 1837లో తండ్రి మరణానంతరం "ఘాజీ" (పవిత్ర యోధుడు) బిరుదం దాల్చి ఆయన బాద్‌షా అయ్యాడు. అప్పటికే అతనికి 60 ఏళ్లు. ఉర్దూలో చక్కని సూఫీ కవి. అంతకుమించి బహదూర్‌షా గురించి ప్రత్యేకంగా చెప్పుకోవలసింది ఏమీ లేదు. చిన్నతనం నుంచీ నల్ల మందుకు అలవాటుపడడం వల్ల ఎక్కువగా మగతలో ఉండి పగటి కలలు కంటూండేవాడు. తలచుకుంటే తాను ఈగగానో, తుమ్మెదగానో మారి లోకాలన్నీ చుట్టి రాగలనని నమ్మకంగా అందరికీ చెబుతుండేవాడు. అకటావికటపు రాజుకు అవివేకి ప్రధాని చాదస్తపు పరివారం అన్నట్టు అతడి చుట్టూ చేరినవారూ అతడికి తోడుపోయినవారే. ముఖ్యంగా హసన్ అస్కారీ అనే రసికరాజు అతడికి ఆధ్యాత్మిక గురువు. యజ్ఞాలు, హవనాలు చేసి పాదుషాను ప్రపంచ విజేతనో, ఇంద్ర లోకాధిపతినో చేస్తానని అతడు అంటుండేవాడు. పాదుషా నమ్ముతూండేవాడు. రాజనీతి, యుద్ధాలు, దౌత్యాలు, పరిపాలన లాంటివి బహదూర్‌షా ఒంటికి పడేవి కావు. ముద్దుల భార్య జీనత్ మహల్ కుమారుడైన జవాన్‌భఖ్త్‌ను యువరాజుగా చూడాలన్నదే అతడి ఏకైక కోరిక. తల్లి హైందవ స్త్రీ ఐనందున జన్మతః అతడికి కొంత హైందవ సంస్కారం సంక్రమించింది. హైందవ పుణ్య క్షేత్రాలకు వెళ్లినప్పుడూ, పర్వదినాలలోనూ నుదుట బొట్టు మెడలో జంధ్య వేసుకునేవాడు. అసమర్థుడే అయినా తన పూర్వీకులు చాలామందిలా బహదూర్‌షా దుష్టుడు కాడు; భ్రష్టుడు కాడు. స్వతహాగా సౌమ్యుడు.

ఆ సౌమ్యతతోనే 1837లో పాదుషా కాగానే తన లక్ష రూపాయల భరణ్ మొత్తాన్ని పెంచమని కంపెనీ వారిని బహదూర్‌షా అడిగాడు. అంతకుముందు అతని తండ్రి అక్బర్‌షా కూడా అలాంటి అభ్యర్థనే చేశాడు. గవర్నర్ జనరల్ వినకపోతే తన పక్షాన బ్రిటిష్ రాణి వారికి నచ్చచెప్పి పని సాధించటానికి రాజ రామమోహనరాయ్‌ని తన దూతగా సీమకు పంపాడు కూడా. రాయ్‌గారుతన శక్తియుక్తుల్ని ఎంత ప్రతిభావంతంగా ప్రదర్శించినా తెల్లవాళ్లు కనికరించలేదు. బహదూర్‌షా అటువంటి పైరవీ ఏదీ చేయదలచుకోలేదు. భరణం పెంచేది లేదని చెప్పగానే గమ్మునుండిపోయాడు. కాని అతడు ఊరకునిదామనుకున్నా తెల్లదొరలు ఊరు కోనివ్వలేదు. పాదుషా గౌరవాన్ని, పరువును పలచన చేయటానికి ఒకటి తరవాత ఒకటిగా వారు రెచ్చగొట్టే చర్యలకు ఉపక్రమించారు. లార్డ్ ఎలన్‌బరో గవర్నర్ జనరల్‌గా రాగానే పాదుషాకి నజరానా చెల్లింపును ఆపు చేయించాడు. బ్రిటిష్ రెసిడెంటుగా ఉన్న మెట్‌కాఫ్ చీటికి మాటికీ పాదుషాను తీరికూర్చుని అవమానించేవాడు. బ్రిటిష్ ఇండియాను 'చదును చేయటానికి' అవతార మెత్తి వచ్చిన గవర్నర్ జనరల్ డల్‌హౌసీ సరేసరి. సతారానూ, నాగపూర్‌నూ, అవధ్‌నూ నోటి కరిచినట్టే మొగల్ పాదుషానూ వెళ్లగొట్టేస్తే తమకు ఎదురన్నది ఉండదు కదా అని ఆ దొర చాలా ముచ్చటపడ్డాడు. ఐతే లండన్‌లోని కంపెనీ యజమానులు మాత్రం ఈ విషయంలో తొందరపడవద్దు; ఎలాగూ పాదుషా ఎనభయ్యేళ్ల ముదుసలి అయ్యాడు కదా ? బతికినంత కాలం అతడిని బతనిచ్చి అతడు పోయిన తరువాత కాగల కార్యం సాధిద్దాం అని వారించారు. సరే ! అప్పటిదాకా ఖాళీగా ఉండట మెందుకని కంపెనీ అధికారులు రాజరికాన్ని ఎత్తివేయటానికి మరోవైపు మంచి నరుక్కురాసాగారు.

పాదుషా తరవాత పెద్దకొడుకో, పాదుషా కోరుకున్న కుమారుడో ఉత్తరాధికారి అవుతాడు. ఆ విషయంలో తామేమీ కలగజేసుకోమనీ, పుత్ర పౌత్ర పారంపర్యంగా మీ ఆధిపత్యాన్ని అనుభవించటానికి తాము నసేమిరా అడ్డురామనీ కంపెనీ వారు 1804లో కూడా షా ఆలంకి ఒట్టేసి చెప్పారు. ఏది చెయ్యబోమని చెబుతారో సరిగ్గా దాన్నే చెయ్యటాన్నే ఇంగ్లీషు వాళ్లు రాజనీతి అంటారు.

1839 లో యువరాజు దారాభక్త్ మరణించాడు. ఆ స్థానంలో ఎవరిని నియమించాలన్న సమస్య వచ్చింది.

ఉన్నవారిలో పెద్దవాడు మీర్జా ఫక్రుద్దీన్. అప్పటికి 30 ఏళ్లవాడు. అతగాడు ఇంగ్లీషువాళ్ల తొత్తు. అతణ్ని యువరాజును చెయ్యటం తండ్రికి ఇష్టం లేదు. ఆ కుర్రాడు ఐతేనే తమ భవిష్య వ్యూహానికి వాటంగా పనికొస్తాడని అప్పటి గవర్నర్ జనరల్ డల్‌హౌసీకి అనిపించింది. ఇంకేం ? తండ్రి అనంతరం నువ్వు పాదుషా కాగానే ఎర్రకోట విడిచిపోవాలి అని షరతు పెట్టి ఒప్పించి, మీర్జాఫకీరుద్దీన్‌ను పాదుషా వద్దు వద్దంటున్నా వినకుండా యువరాజును చేశారు. రహస్యపు ఒప్పందం బయటపడటంతో అతడిపై కుటుంబంలో తీవ్ర వ్యతిరేకత వచ్చింది. తరవాత ఏమైందో, ఎవరు ఎలా పుణ్యం గట్టుకున్నారో తెలియదు గానీ 1856 జులై 10న మీర్జావక్రూ విషప్రయోగం వల్ల మరణించాడు. మళ్లీ యువరాజు పదవి ఖాళీ అయింది. ఏది ఏమైనా అది తన కొడుకు జవాన్ భఖ్త్‌కే దక్కాలని జీనత్ మహల్ పట్టుబట్టి కూచుంది. వాడికి పట్టుమని పన్నెండేళ్లు లేవు. ఐనా మిగతా ఎనిమిదిమంది కుమారులకు తండ్రి నచ్చచెప్పి, ఎవరూ వాడికి అడ్డం రాకుండా ఒప్పించి, ఆమేరకు వాళ్ల నుంచి ఉత్తరాలు కూడా తీసుకున్నాడు. ఏజంటు థామస్ మెట్‌కాఫ్ తనను చూడవచ్చినప్పుడు ఆ ఉత్తరాలు అతడి చేతిలో పెట్టి, ఎవరికీ అభ్యంతరం లేదు కనుక తన చిన్నకొడుకునే యువరాజుగా గుర్తించ వలసిందని కోరాడు. మెట్‌కాఫ్ సరే చూద్దాం అని చెప్పి తన పద్ధతిలో పావులు కదిపాడు. ఇరవై నాలుగు గంటలు తిరక్కుండా మీర్జా కివాయిష్ అనే కుమారుడి నుంచి పోటీ ఉత్తరం రాబట్టాడు. మా తండ్రి ఒత్తిడి చేసి, ఏవేవో ఆశలు పెట్టడంవల్ల వెనకటి ఉత్తరం

www.thearyasamaj.org

రాసిచ్చానినీ; ఖురాన్‌ను కంఠతా పట్టినందువల్ల, హజ్‌కు పోయి వచ్చినందువల్ల, అందరిలోకీ పెద్దవాడిని అయినందువల్ల యువరాజయ్యే యోగ్యత తనకు మాత్రమే కలదనీ దాని సారాంశం. దాన్ని అడ్డం పెట్టుకుని గవర్నర్ జనరల్ కానింగ్ - పాదుషా అభిమతాన్ని తోసిపుచ్చి, పెద్ద కుమారుడిని యువరాజుగా ప్రకటించాడు. అందుకు ప్రతిఫలంగా ఆ రాజకుమారుడి నుంచి తమకు కావలసిన షరతులకు అంగీకారం రాబట్టాడు.

ఆ షరతులు ఏమిటంటారా ? అతగాడు బతికినంతకాలం యువరాజు (షాజాదా) బిరుదంతో తృప్తిపడాల్సిందే. తండ్రి మరణించాకైనా అతడికి 'పాదుషా' పదవి దక్కదు. తండ్రికిస్తున్న నెలకు లక్ష రూపాయల భరణం కూడా తదనంతరం అతడికి చెందదు. ఖర్చుల కింద నెలకు 15 వేల రూపాయలు మాత్రం అతడికి ముట్టజెబుతారు. అదే మహద్భాగ్యమనుకుని నెత్తిన గుడ్డ వేసుకుని ఎర్రకోట వదిలి పోవలసిందే. తండ్రి మరణించాక ఒక్కరోజైనా అందులో అతడు ఉండటానికి వీలులేదు.

సుపుత్రుడు అన్ని షరతులకూ ఒప్పేసుకుని, ఇంగ్లీషు వారితో సిగ్గుచేటు బేరం కుదుర్చుకుని 'యువరాజు' అనిపించుకున్నాడు. ఆ షరతుల సంగతి తెలియగానే బహదూర్‌షాకూ, అతడి కుటుంబీకులకూ, దర్బారు వారికీ నెత్తిన పిడుగు పడ్డట్టయింది. అప్పటికి బహదూర్‌షా పాదుషా అయి ఇరవై ఏళ్లు దాటింది. అతని వయసు 80 మించింది. ఎక్కువ కాలం బతికే ఆశ లేదు. తనతోపాటే బాద్‌షాగిరీ కూడా అంతమై, తనను నమ్ముకున్నవారు చెట్టుకొకరు. పుట్టకొకరుగా అడుక్కు తిని బతకవలసిందే. ఇదీ తన పూర్వులు ఇంగ్లీషు వారిని నమ్మి, వారి మెరమెచ్చులకు మోసపోయి కోరిన వరాలు ఇచ్చినందుకు మొగల్ సింహాసనానికి పట్టిన దుర్గతి.

కాని వృద్ధుడు; కాటికి కాళ్లు చాచుకుని ఉన్నవాడు ! ఏమి చేయగలడు ? విధి వైపరీత్యాన్ని ఎలా అడ్డుకోగలడు ? బహ దూర్‌షాకి వచ్చిన విద్య ఉర్దూలో కవిత్వం చెప్పటం ఒక్కటే. మీర్జాగాలిబ్ లాంటి ఆ కాలపు ఢిల్లీ కవులను పిలిపించుకుని తన మనసులోని ఘోషను బహదూర్‌షా ఇలా వెళ్లబోసుకునే వాడట.

Oh Zafar it is up to you these affairs of the state
After you there shall be no successor and no affairs of State

(ఓ. జఫర్ ! ఈ రాజ్య వ్యవహారాలన్నీ నువ్వు ఉన్నంతవరకే ! నీ తరవాత వారసుడూ ఉండడు ! రాజ్య వ్యవహారాలూ ఉండవు.)

కహ్‌దో ఇన్ హసరతోంసే కహీఁ ఔర్ జా బసే
ఇత్‌నీ జగ్‌హా కహాఁహై దిల్- ఇ దాఘ్‌దార్‌మేఁ

(ఈ ఉద్వేగాలను ఇంకెక్కడికైనా పొమ్మని చెప్పు ! గాయపడ్డ ఈ గుండెలో వాటికి చోటు ఎక్కడిది ?)

ఇలా కవిత్వంతో గుండె బరువు దించు కుంటూ, నిట్టూరుస్తూ, గత వైభవాన్ని తలచుకుంటూ కుమిలిపోతూ చావాల్సిందే తప్ప తాను చేయగలిగిందీ, తననూ తన వారినీ అన్యాయం చేసిన ఫిరంగీలపై కక్ష తీర్చుకోగలిగిందీ ఏమీ లేదనే బహదూర్‌షా ఉసూరుమని పరిస్థితితో రాజీపడ్డాడు.

కాని ! అంతలోనే ఊహించనిది జరిగింది. నిస్సహాయంగా, దయనీయంగా పడి ఉన్న పాదుషాయే ఒక మహా సంచలనానికి, ఒక అపూర్వ విప్లవానికి ఊహించని రీతిలో కేంద్ర బిందువయ్యాడు. మహా జాతీయశక్తి దైవికంగా వెతుకుంటూ వచ్చి అతడి తలుపు తట్టటంతో బహదూర్‌షా రాత మారింది. చరిత్ర గతీ గొప్ప మలుపు తిరిగింది.

చలో ఢిల్లీ

మే 10 రాత్రి పొద్దుపోయాక మీరట్‌లో బయలుదేరిన సిపాయిల మొదటి జట్టు ఎక్కడా ఆగకుండా మర్నాడు ఉదయం ఏడున్నర గంటలకల్లా ఢిల్లీ చేరింది. వెనక నుంచి యూరోపియన్ దళాలు తరుముకొస్తాయే మోనని రాత్రంతా భయపడుతూనే ఉన్నారు. మెరికల్లాంటి కార్బయినర్స్ దళాల ముందు తమ గుర్రాల వేగం చాలదని సిపాయిలకి తెలుసు. వారి అదృష్టం బాగుండి మీరట్‌లో సైనిక దొరలు తిరుగుబాటు దిమ్మెరపాటు నుంచి సకాలంలో కోలుకోలేకపోయారు.

ఢిల్లీ పోలీసు కమిషనరు సైమన్ ఫ్రేజరుకు సమయానికి మెదడు సరిగా పనిచేసినా సిపాయిల పని కష్టమయ్యేదే ! ముందురోజు మీరట్‌లో గొడవలు మొదలయ్యాక ఢిల్లీకి సమాచారం పంపాలని అక్కడి టెలిగ్రాఫ్ సిబ్బంది ప్రయత్నించారు. కాని - తిరుగుబాటు దారులు ముందుజాగ్రత్తగా లైన్లు కట్ చెయ్యటం వల్లేమో టెలిగ్రాఫ్ వ్యవస్థ పనిచెయ్యలేదు. దాంతో మీరట్‌లోని బ్రిటిష్ సివిల్ అధికారులు తమకు నమ్మకస్తుడైన భారతీయుడొకడికి భారీగా లంచం ఇచ్చి ఢిల్లీకి ఆగమేఘాల మీద కబురు పంపారు. మీరట్‌లో సైనిక తిరుగుబాటు లేచినిది; తిరగబడ్డవారు ఢిల్లీకేసి పోవచ్చని పుకారు వినిపిస్తోంది; మీరు మీ జాగ్రత్తలో ఉండవలసింది - అని ఢిల్లీ పోలీసు కమిషనరును అందులో అప్రమత్తం చేశారు.

కబురు మోసుకుని సురగలు కక్కుతూ గుర్రం మీద దూత ఢిల్లీ చేరేసరికి అర్ధరాత్రి దాటింది. అప్పటికి పోలీసు కమిషనరు ఫ్రేజర్ తప్పతాగి మొద్దులా నిద్రపోతున్నాడు. విషయం ఎంత ముఖ్యమైందో అర్థమయ్యాక సేవకులు వెళ్లి కమిషనరు దొరగారిని లేపి అర్జంటు ఉత్తరం చేతిలో పెట్టారు. ఆయన దాన్ని సగం నిద్రలో చదువుకుని మడిచి జేబులో పెట్టుకుని మళ్లీ గురక పెట్టి నిద్రపోయాడు. తిరిగి ఆయనను లేపటానికి పరిచారకులకు ధైర్యం చాలలేదు. ఉదయం నిద్రలేచాక చాలాసేపటికి ఆ ఉత్తరం సంగతి గుర్తుకొచ్చి, కమిషనరు గారు కంగారుపడుతూ కదలబోయేసరికి సమయం మించిపోయినిది. అప్పటికే మీరట్ నుంచి ఆశ్విక దళాలు రివ్వున వచ్చి పడవల వంతెన మీదుగా యమున దాటి ఎర్రకోటను చేరాయి. దారిలో టోల్‌గేటు వద్ద బ్రిటిష్ అధికారి అడ్డగిస్తే నరికి పారేసి ఊళ్లో ప్రవేశించాయి.

అది మండువేసవి కావటంతో ఎనిమిది కాకుండానే బారెడు పొద్దెక్కినట్టుంది. అప్పటికి మీరట్ కబురేదీ ఢిల్లీవాసులకు తెలియదు. మరికొద్ది గంటల్లో అక్కడ నెత్తుటి ఏరులు పారుతాయని ఎవరూ ఊహించలేదు. వేసవిలో ఒంటిపూట తరగతులు కావడంతో ప్రొఫెసర్ రామచంద్ర కాలేజీకి చేరుకుని క్లాసుకు ప్రిపేరవుతున్నాడు. మున్షీ మోహన్‌లాల్ తన ఇంటికి వచ్చిన ఇంగ్లీషు మిత్రుడితో చరిత్ర పరిశోధన గురించి కబుర్లాడుతున్నాడు. ముందురోజు సాయంత్రం కలకత్తా నుంచి వచ్చిన వార్తాపత్రికలను ముందేసుకుని జాబ్జర్ నవాబు ఏజంటు కాశీ ప్రసాద్ టీ తాగుతూ ప్రపంచ విశేషాలను చదువుకుంటున్నాడు. పాదుషా ఆస్థానంలో వార్తలను రాసిపెట్టే ఉద్యోగం చేసే మున్షీ జీవన్‌లాల్ పాలస్ గార్డులు అధికారి కెప్టెన్ డగ్లాస్‌ను దర్శించి వచ్చి, పాలెస్‌కు పోవటానికి పల్లకీని సిద్ధం చేయిస్తున్నాడు. మహార్‌గంజ్ పోలీసు స్టేషను అమీన్ మెయినుద్దీన్ ఏదో క్రిమినల్ కేసుకు సంబంధించి కలెక్టరు దొరవారి కచ్చేరీకి పోయి మాట్లాడుతున్నాడు. కమిషనర్ సైమన్ ఫ్రేజర్ గురకపెట్టి నిద్రపోతున్నాడు.

www.thearyasamaj.org

అంతలో ప్రశాంత స్థితి భగ్నమై కేకలు వినిపించాయి. వీధుల్లో ఎక్కడ చూసినా జనం అరుస్తూ అటూ ఇటూ పరుగెత్తుతున్నారు. మీరట్ నుంచి సిపాయిలు వచ్చి పడ్డారు; టోల్ కలెక్టరును చంపేశారు. వాళ్ల కచేరీకి నిప్పు పెట్టారు; కోటలోకి పోతున్నారు – అంటూ జనం గోల గోలగా చెప్పుకుంటున్నారు. హఠాత్తుగా పరిస్థితి ఉద్రిక్తమైంది. కలెక్టర్ హచ్చిన్సన్ తన కచేరీ నుంచి కమిషనరు బంగళాకు పరుగున వెళ్లాడు. ఇద్దరూ కలిసి పాలెస్‌కు బయలుదేరారు.

ఈలోపు కోటలోని రాజమందిరం గగ్గోలెత్తి పోతోంది. ముసలి పాదుషా బహదూర్‌షా గొడవకు బిత్తరపోయి తన నివాస భవనం నుంచి బయటికొచ్చి కిటికీ నుంచి తొంగి చూశాడు. పాదుషా జనానికి దర్శనమిచ్చే స్పెషల్ సిట్టింగు రూము బాల్కనీ డోము ఎదురుగా ఐదారుగురు అశ్వికులు నిలబడి "బాద్‌షా ! దొహాయ్ హై దొహాయ్" (శరణు శరణు పాదుషా) అని పెద్దగా అరుస్తున్నారు. మొగల్ సామ్రాజ్యం బతికున్న పాత రోజుల్లోనైతే న్యాయార్థులెవరైనా వచ్చి అలా కేకపెట్టగానే పాదుషా బాల్కనీలోకి వెళ్ళి సంగతేమిటో కనుక్కునేవాడు. పాదుషాకే దిక్కు లేకుండా పోయాక జనం అటుకేసి రావటమే మానుకున్నారు. తన ఇరవై ఏళ్ల బాద్షాగిరీలో మొదటిసారిగా అంత అలజడి బయట వినిపించడంతో ముసలి పాదుషా విషయమేమిటో తెలుసుకోమని నౌకర్లను పంపాడు. వాళ్లు తెలుసుకొచ్చిన సమాచారం విన్నాక సిట్టింగ్ రూము బయటికొచ్చి తన సహాయకుడైన వకీలు గులాం అబ్బాస్‌ను పిలిపించాడు. "వీళ్లెవరో మీరట్‌లో తిరగబడి ఇక్కడికి వచ్చారట. యూరోపియన్లందర్నీ చంపుతామంటున్నారట. నువ్వు వెంటనే తిరగబడి ఇక్కడికి వచ్చారట. యూరోపియన్లందర్నీ చంపుతామంటున్నారట. నువ్వు వెంటనే పోయి కెప్టెన్ డగ్లాస్‌ను పిలుచుకురా! ఇక్కడ గొడవలు జరక్కుండా చూడమని చెప్పు" అని పంపించాడు. ఆగంతకులెవరూ లోపలికి రాకుండా బాల్కనీ కింది గేటును మూయించాడు.

కబురు తెలియగానే పాలెస్ గార్డుల దళం కమాండెంటు కెప్టెన్ డగ్లాస్ పరుగున వచ్చాడు. దివాన్-ఇ-ఆమ్ మందిరం దగ్గర పాదుషా అతన్ని కలుసుకుని "ఇక్కడ ఏమవుతోంది ? వీళ్లంతా ఎలా వచ్చారు ? ఇప్పుడు ఏమి చేయటం" అని ఆందోళనగా అడిగాడు. "ఏమో సర్ ! నాకు తెలియదు. బాల్కనీ కింద గేటు తెరిపిస్తే నేను వెళ్లి వాళ్లతో మాట్లాడతాను" అన్నాడు. డగ్లాస్. యూరోపియన్ అధికారిని చూస్తేనే నేటివులకు వొణుకు. కనుక తాను వెళితే చాలు అంతా తోక ముడుస్తారని అతను అనుకున్నాడు. రోజులు మారాయన్న సంగతి అతడికి తెలియదు. "వద్దు నిన్ను పోనివ్వను. వాళ్లు నిన్ను చంపేస్తారు" అన్నాడు పాదుషా – డగ్లాస్ చెయ్యి పట్టుకుని, అక్కడే ఉన్న రాజ వైద్యుడు అహ్సన్ ఉల్లా ఖాన్ కూడా డగ్లాస్‌ను వారించి "నిజమే. మీరు పోవద్దు. కావాలంటే బాల్కనీ లోంచి వాళ్లతో మాట్లాడండి" అన్నాడు. సరేనని డగ్లాస్ ఠీవిగా అష్ట భుజాల టవరు కింది బాల్కనీలోకి వెళ్లాడు. గులాం అబ్బాస్ అతని వెంట ఉన్నాడు. అప్పటికి కింద అశ్వికుల సంఖ్య 30, 40కి పెరిగింది. కొంతమంది కత్తులు ఝుళిపిస్తున్నారు. కొంతమంది చేతిలో పిస్టళ్లు, కార్బయిన్లు ఉన్నాయి. వెనకు నుంచి వంతెన దాటి ఇంకా చాలామంది గుర్రాల మీద, కాలినడకన తెరలు తెరలుగా అక్కడికి చేరుకుంటున్నారు.

డగ్లాస్ తన బ్రిటిష్ దర్పాన్నంతా గొంతులో నింపి "ఏయ్ ! ఇక్కడికి రాకూడదు. ఇది పాదుషా, అంతఃపుర స్త్రీలు నివసించే ప్రాంతం. ఇటుకేసి రాకూడదు. మీరేమైనా చెప్పదలచుకుంటే పోలీసు స్టేషనుకు పోయి ఫిర్యాదు చెయ్యండి, పొండి ! పొండి" అని ఝరోకా కిటికీలోంచి గర్జించాడు. కాని ఆగంతకులెవరూ వినే స్థితిలో లేరు. తెల్లవాణ్ని చూస్తేనే వారు రెచ్చిపోతూ "దీన్ ! దీన్ !" అని అరుస్తున్నారు. ఎంతకీ పాదుషా బాల్కనీలోకి వచ్చేలా లేదని కాసేపటికి గ్రహించి సిపాయిలు విసుగెత్తి నెమ్మదిగా రాజ్‌ఘాట్ గేటు వైపు మరలి పోయారు. డగ్లాస్ లోపలికి వెళ్లాడు. అతన్ని చూస్తూనే "పాలెస్ గేట్లు సిటీ గేట్లూ అన్నీ వెంటనే మూసేయించు. వాళ్లు లోపలికి చొచ్చుకొస్తారో ఏమో" అన్నాడు పాదుషా కంగారుగా. "భయపడాల్సిందేమీ లేదు; అంతా నేను చూసుకుంటాను. ఒక్కణ్నీ లోపలికి రానివ్వను" అని భరోసా ఇచ్చి డగ్లాస్ వెళ్లి పోయాడు. అన్నట్లే గేట్లన్నీ మూసేయించాడు ఇక పురుగు కూడా లోపలికి రాలేదనే అనుకున్నారు.

మామూలుగా ఐతే అంతే ! కాని ఆనాటి పరిస్థితి వేరు. పైగా ఆరోజు పాలస్ కాపలా డ్యూటీలో ఉన్నది 38వ నేటివ్ పటాలం. ఐదేళ్ల కింద డల్హౌసీ బర్మాకు పంపించబోతే మతాచారం కారణంతో ఖండితంగా నిరాకరించి పంతం నెగ్గించుకున్న పటాలమది. ఆవు, పందికొవ్వులు పూసిన తూటాలను తమ నోట కరిపించి తెల్లవాళ్లు తమను మత భ్రష్టులను చేయదలిచారని అనలేవారు ఆవేశంతో ఊగిపోతున్నారు. ఆరోజు మీరట్ నుంచి సిపాయిలు రానున్నట్టు ముందు రాత్రే వారికి కబురందింది. తాము వెయ్యికళ్లతో ఎదురుచూస్తున్న సోదరులు ఆయుధాలు పట్టి అనుకున్నట్టే తమ చెంతకు వచ్చేసరికి వారు ఉత్సాహంతో ఉప్పొంగారు. డగ్లాస్‌తో వాదించి లాభం లేదని విసుగెత్తిన అశ్వికులు రాజఘాట్ గేటు దగ్గరకి రాగానే వారు తలుపులు బార్లా తెరిచి విప్లవ సోదరులకు స్వాగతం చెప్పారు. అంతా కలిసి ఉరకలేస్తూ ఊరిమీద పడ్డారు.

వారిని చూడగానే మామూలు పౌరులూ పులులైపోయారు. ఇంగ్లీషు వాళ్ల చేతుల్లో చిరకాలంగా నానా అవమానాలు పడుతూ నానా అన్యాయాలకూ, వేధింపులకూ గురి అవుతున్న వారిలో లోలోన రగులుతున్న ఆగ్రహం ఒక్కసారిగా కట్టలు తెంచుకుంది. దేశాన్ని దుర్మార్గంగా కబళించిన అంగ్రేజీలను నిర్మూలించమంటూ ఇరాన్ షా పేరిట కొద్దిరోజుల కింద వెలువడిన ప్రకటన కూడా ఢిల్లీ ముస్లింల మీద బాగా పనిచేసింది. గుంపులు గుంపులుగా పరుగెత్తుకొచ్చి విప్లవ సిపాయిలకు షర్బతులిచ్చి 'దీన్ దీన్' (మతం, మతం) అంటూ కట్టెలూ కత్తులూ పట్టుకుని వారి వెంట సాగారు. ఇలాంటి పరిస్థితుల్లో సర్వసాధారణంగా జరిగేట్టు గూండా, రౌడీల్లాంటి అసాంఘిక శక్తులూ వారిలో కలిసిపోయాయి.

ఈలోపు కమిషనర్ ఫ్రేజర్ నగరంలోని ఆయుధాగారం దగ్గరికి గుర్రబ్బండిపై పోయి అక్కడ కాపలా కాస్తున్న తెలుగు సైనిక కంపెనీ సుబేదారును పిలిచి "దాడి జరగవచ్చు. మీరంతా జాగ్రత్తగా ఉండాలి. ఆ?వీధాలను కాపాడాలి" అని కర్తవ్యబోధ చేశాడు. "మీ కర్తవ్యం కంటే మాకు మా మతం ఎక్కువ. ఏమి చేయాలో మాకు తెలుసులే" అన్నారు తెలుగు సిపాయిలు. కమిషనరుకు తిన్నగా శాల్యూట్ కూడా చెయ్యలేదట వాళ్లు. మరికొంత దూరం వెళ్లేసరికి అల్లరిగుంపు కమిషనరు బండి వెంట పడింది. మిగతా బ్రిటిషు అధికారులకూ అలాంటి పరాభవాలే ఎదురయ్యాయి. కమిషనర్ ఫ్రేజర్, పాలస్ కమాండంటు డగ్లాస్, రెసిడెంటు సర్ థామస్ మెట్‌కాఫ్, జిల్లా మేజిస్ట్రేటు హచ్చిన్సన్, తదితరులు ఢిల్లీ ప్రధాన పోలీసు ఠాణాలో

www.thearyasamaj.org

చేరారు. అక్కడా వారికి రక్షణ లేకపోయింది. తిరగబడ్డ సిపాయిలు, ఢిల్లీ పౌరులు పోలీసు స్టేషన్‌ను చుట్టుముట్టారు. కమిషనర్ ఫ్రేజరు ఒక సిపాయిని తుపాకితో కాల్చి చంపాడు. అయినా గుంపులు భయపడలేదు. ఠాణాపై రాళ్లు రువ్వుతూ చేతికందిన ఆయుధాలతో దాడి చేయసాగారు. ఇక అక్కడ ఉంటే ప్రమాదమని గ్రహించి యూరోపియన్ దొరలందరూ ఇళ్లకు పరుగుపెట్టారు. జనం వారి వెంటపడ్డారు.

ఇక్కడ రాజ మందిరంలో కెప్టెన్ డగ్లాస్ ప్రయోజకత్వం మీద భరోసా ఉంచి పాదుషా తన గదిలోకి వెళ్లి కునికిపాట్లు పడసాగాడు. వకీలు గులాం అబ్బాస్, వైద్యుడు అహ్సాన్ ఉల్లాఖాన్ దివాన్-ఇ-ఆమ్ మందిరంలోనే కబుర్లాడుకుంటూ ఉన్నారు. గంట తరువాత కెప్టెన్ డగ్లాస్ నౌకరు పరుగెత్తుకుంటూ వచ్చాడు, అహ్సాన్ ఉల్లా ఖాన్ గారిని తన దొరగారు వెంటనే ఇంటికి రమ్మంటున్నారంటూ. ఏమైందోనని ఇద్దరూ చప్పున డగ్లాస్ ఇంటికి వెళ్లారు. దూరాన యూరోపియన్లు నివసించే దర్యాగంజ్ ప్రాంతం నుంచి మంటలు లేచి దట్టమైన పొగలు ఆకాశాన్ని కమ్ముకుంటూ వారికి కనిపించాయి. మీరట్ ట్రూపర్లు బంగళాలను కాల్చేస్తున్నారని దారిన పోయేవారు చెప్పుకుంటున్నారు. సరాసరి లాహోర్ గేటు దగ్గరి డగ్లాస్ క్వార్టరు దగ్గరికి పోయేసరికి కమిషనర్ ఫ్రేజర్ కూడా అక్కడే కత్తిదూసి నిలబడి కనపడ్డాడు. ఆయన పక్కన ఉన్న ఆంగ్లేయుల చేతుల్లో పిస్టల్స్ ఉన్నాయి. రాచవారికి తెల్లవారు రక్షణ కల్పించగలిగిన దశ దాటి తెల్లవారికే రక్షణ లేక దిక్కుతోచని దుస్థితి అది.

డగ్లాస్ ఇంటికి కాపలాకు రెండు ఫిరంగులను, కొంతమంది భటులను వెంటనే చంపించమని పాదుషాకు నా మాటగా చెప్పు అన్నాడు కమిషనరు. గులాం అబ్బాస్ పాలెస్‌కు పరుగెత్తి పాదుషాకు ఆ కబురు చెప్పాడు. సరే. ఫిరంగుల్ని, మనుషుల్ని వెంటనే అక్కడికి పంపించేట్టు చూడు అన్నాడు పాదుషా. ఇంతలో డగ్లాస్ ఇంటికి పోయిన అహ్సాన్ ఉల్లాఖాన్ వచ్చి "ఆడవాళ్లు అక్కడ ఉంటే ప్రమాదమట. వెంటనే రెండు మేనాలను పంపించి తన ఇంట్లోని దొరసానులను రహస్యంగా పాలెస్‌కు చేరవేయించమని డగ్లాస్ దొర అడుగుతున్నాడ"ని చెప్పాడు. సరేనని పాదుషా వెంటనే రెండు మేనాలను పంపే ఏర్పాటు చేశాడు.

తరవాత కాసేపటికే పల్లకిల వెంట పోయిన సేవకుడు హడలిపోతూ వచ్చి 'కమిషనర్ సాహెబ్'ను మూకలు చంపేశాయని చెప్పాడు. ఆ సంగతి నిజమేనా ? డగ్లాస్ ఎలా ఉన్నాడు? మిగతా వారి పరిస్థితి ఏమిటి - అన్నది చూసి రమ్మని పాదుషా మనుషుల్ని ఉరికించాడు. అప్పటికి ఉదయం 10 గంటలైంది. కాసేపట్లో వెళ్లినవారు తిరిగిగొచ్చారు. కమిషనర్ ఫ్రేజర్‌నే కాదు; డగ్లాస్‌నూ జనం చంపేశారు. కలెక్టరునూ నరికేశారు. వాళ్లతోపాటు ఉంటున్న స్త్రీలను, యూరోపియన్లను ఖతం చేశారు. బయటంతా నానా గత్తరగా ఉంది; కనపడ్డ తెల్లవాళ్లనల్లా చంపేస్తున్నారు - అంటూ.

ముసలి పాదుషాకు దిమ్మ తిరిగి పోయింది. ఏమవుతున్నదో, తాను ఏమి చేయాలో అతడికేమీ పాలుపోలేదు. అంతలోనే ఇంకో కబురు. తిరుగుబాటుదారులు, అల్లరి మూకలు కలిసి పాలెస్‌లోకి చొరబడ్డారట. పాలెస్ గేట్ల దగ్గర కాపలా వున్న రెండు కంపెనీ వాళ్లూ వారితో చేరిపోయారట. అంతా కలిసి పిస్టళ్లు, మస్కట్లు గాలిలో పేల్చుకుంటూ దివాన్-ఇ-ఖాస్ వైపు దూసుకొస్తున్నారు. ఆ వార్త నిజమా కాదా అని నిర్ధారించుకోవలసిన అవసరం లేకపోయినిది. తుపాకుల మోతలు, బిగ్గరగా కేకలూ, రంకెలూ, గుర్రపు డెక్కల చప్పుళ్లు దూరం నుంచి చెవులు పగిలేలా వినిపిస్తూ అంతకంతకూ దగ్గరవుతున్నాయి. కాసేపటికి సిపాయిలు, ఆశ్వికులు గుంపుగా వచ్చి ప్రత్యేక మందిరంలో గుమికూడారు. వాళ్లలో చాలామంది రాజ భవనం లోపల జన్మలో అడుగుపెట్టలేదు. రాచమర్యాదలు వారికి తెలియవు. మహామహావాళ్లే పాదుషా సమక్షంలో ఉన్నప్పుడు వినయంగా చేతులు కట్టుకుని బహునెమ్మదిగా మాట్లాడతారు. చెప్పుల కాళ్లతో ఆయన దగ్గరికి వెళ్లేందుకు ఎంతటివారూ ధైర్యం చేయరు. సిపాయిలకు ఆ సంప్రదాయాలు తెలియవు. చంపటమూ, చావటమూ మాత్రమే వారు ఎరుగుదురు. బూటు కాళ్లతో ఎక్కడ పడితే అక్కడ తొక్కేస్తూ పాదుషా తమకు దర్శనమివ్వాలంటూ గోలగోలగా అరుస్తున్నారు. కొంతమందైతే గుర్రాలు దిగకుండా అలాగే లోపలికొచ్చేశారు.

పాదుషా సభా మందిరం గుమ్మం దగ్గరికి వెళ్లి, అందరినీ నిశ్శబ్దంగా ఉండవలసిందని తన సహాయకులతో చెప్పించాడు. సిపాయి ఆఫీసర్లలో కొద్దిమంది మాత్రం ముందుకొచ్చి చెప్పదలచింది చెప్పుకోవచ్చునన్నాడు. దాంతో గలభా ఆగింది. మీరట్ నుంచి వచ్చిన అశ్విక దళం ఆఫీసర్లు గుర్రాల మీద ఉండే నాలుగడుగులు ముందుకొచ్చి పాదుషాకు వినయంగా విన్నవించుకున్నారు. కంపెనీవాళ్లు ఆవు, పంది కొవ్వు పూసిన తూటాలను తెచ్చి మమ్మల్ని బలవంతంగా కొరికించ జూస్తున్నారు. కావాలని మమ్మల్ని మతభ్రష్టుల్ని చేయజూస్తున్నారు. అది సహించలేక మేమంతా తిరుగుబాటు చేసి మీరట్ నుంచి వచ్చి తమరి రక్షణ కోరుతున్నాం - అని మనవి చేశారు.

"దానికి నేనేమి చేస్తాను ? నేను మిమ్మల్ని తిరగబడమనలేదు. ఇక్కడి రమ్మనమనీ చెప్పలేదు. మీరు చేసింది దుర్మార్గం. నేనేమి చేయగలను" అన్నాడు పాదుషా. అప్పటికి ఇంకో నూటయాభై రెండొందల మంది మీరట్ సిపాయిలు మెట్లెక్కి వచ్చి గుంపులో కలిశారు. 'మీరు మమ్మల్ని వదిలేస్తే మేము అన్యాయమైపోతాం. తెల్లవాళ్లు మమ్మల్ని చంపేస్తారు. మిమ్మల్నే నమ్ముకుని వచ్చాం. కనికరించండి' అని అంతా కలిసి వేడుకున్నారు. "నేను ముసలివాణ్ని. పైగా పేదవాణ్ని. కంపెనీ వాళ్లిచ్చే పెన్షను మీద ఆధారపడి బతుకుతున్న వాణ్ని. నేను మీకేమి చేయగలను ? నావల్ల ఏమి అవుతుంది ? ఇవ్వడానికి నా దగ్గర ఏముంది" అన్నాడు బహదూర్‌షా.

"మీరు మాకేమీ ఇవ్వక్కర్లేదు. మీరే మా ప్రభువు అనుకుని వచ్చాం. మతాన్ని రక్షించుకోవటం కోసం మీ దగ్గరికి వచ్చాం. కాదనకండి. మమ్మల్ని వదిలితీపెట్టకండి" అన్నారు సిపాయిలు. మాటలు వినయపూర్వకంగా ఉన్నా వాటిని పలికిన తీరు కరాఖండిగా ఉంది. పాదుషా కనుక సరే అనకపోతే అతణ్ని నెట్టివేసి తాము తలపెట్టింది చేసుకుపోవటానికి వారు వెనుకాడబోరని పాదుషాకు అర్థమైంది. మీరు కాకుంటే మా దారి మేము చూసుకుంటామని వారిలో కొందరు అననే అన్నారు కూడా.

ఐనా పాదుషాకు సరే అనేందుకు ధైర్యం చాలలేదు. ఆ వయసులో, తానున్న నిస్సహాయ స్థితిలో తెల్లవాళ్లతో విరోధం పెట్టుకోవటానికి అతడు సాహసించలేకపోయాడు. కుర్చీలో కూలపడి దీర్ఘంగా ఆలోచించాడు. ఏమి చేయాలో పాలుపోలేదు. సరే ! ఇక్కడే ఉండండి. ఆలోచించి చెబుతానని బయటికొచ్చాడు. సిపాయిలు అక్కడే గుర్రాల్ని కట్టేసి, పక్కబట్టలు పరిచేసుకుని, సమావేశ మందిరంలోనే సెటిలైపోయి హడావుడిగా పాలెస్ అంతా కలియ తిరిగేస్తూ పాదుషా నిర్ణయంకోసం వేచి ఉన్నారు.

అప్పుడు సమయం మధ్యాహ్నం 3 గంటలు.

www.thearyasamaj.org

बाल तस्करी कालेधन का स्रोत : सत्यार्थी

नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने बाल तस्करी को कालेधन का स्रोत बताते हुए कहा कि इसके जरिये करोघें रुपये का खेल चल रहा है लेकिन इस तरफ किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। बंधुआ मजदूरी और बालश्रम के किलाफ लघई लड़ने वाले श्री सत्यार्थी ने आज यां यूनीवार्ता से वातचीत में कहा कि बालश्रम के नाम पर हजारों कारखानों में लाखों बच्चों से न्यूनतम मजदूरी पर काम करवाया जाता है और कंपनी के मालिक वयस्क मजदूर के अनुसार अपने खाते की पूर्ति करता है। इसमें करोघें रुपये का हेरफेर हो रहा है लेकिन प्रशासनिक अमले का इस तरफ ध्यान नहीं है। श्री सत्यार्थी ने बाल मजदूरी को मानवता के खिलाफ अबसे घृणित अपराध बताया। उन्होंने इस अभिशाप से त्रस्त दुयिाभ के लाखों बच्चों को इससे मुक्ति दिलाने के लिए कड़ी राजनीतिक इच्छाशक्ति का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और सामाजिक दवाब से इसे दूर करने में मदद मिल सकती है। उन्होंने कहा देश में बाल अधिकारी अथवा बच्चों से जुड़ी समस्याओं को लेकर संसद के दोनों सदनों में आज तक एक दिन भी चर्चा नहीं हो पायी है। इससे हमारे सजनेताओं की इच्छाशक्ति का पता चलता है। शायद ब्चे वोटर नहीं हैं इसलिए इनके मुद्दों को गंभीरता से नहीं लिया जाता है। इसके साथ ही आज तक किसी भी धर्म के धार्मिक गुरु ने बालश्रम, बाल तस्करी तथा बंधुआ मजदूरी जैसे मुद्दों को अपने संबोधन में शामिल नहीं किया है। समाज के एक बड़े हिस्से को प्रभावित करने वालों में भी बच्चों को लेकर संवेदनशीलता की कमी है। नोबेल पुरस्कार विजेता ने कहा कि बाल मजदूरी एक बुराई है, यह सोच पैदा करने के लिए हम लोग काफी प्रयास करते हैं। गांव गांव में, राजनीति स्तर पर, सांसदों के बीच में, अधिकारियों के बीच में प्रयास करते हैं ताकि हर स्तर पर लोगों को समझ आए कि इससे देश को और परी दुनिया को नुकसान हो रहै है। अन्होंने कहा कि देश की राजधानी में भी लड़कियां सुरक्षित नहीं है। प्रशासन के नाक के नीचे वेश्यावृति जैसे कुकृत्य को अंजाम दिया जा रहा है फिर भी कोई कार्रवाई नहीं होती है। ऐसा कैसे संभव ह कि राजधानी में इतना बध अपराध हो रहा हो और प्रशासन को इसकी जानकारी नहीं हो जवकि हर दो तीन गलियों पर पुलिस तैनात रहती है। विभिन्न राज्यों से लड़कियों को शादी अथवा नौकरी के नाम पर खरीदकर लाया जाता है और वेश्यावृति के धंधे में धकेल दिया जाता है। वच्चों को दस हजार से लेकर एक डेढ लाख रुपये में खरीदकर राजधानी में लाया जाता है। इन बच्चों में से लड़कियों को केश्यावृति में धकेला जा रहा है जबकि लड़कों से भीख मंगवाने के अलावा छोटे-छोटे उद्योगों में लगाकर बंधुआ मजदूरी करवाया जाता ह। इन बाल मजदूरों को १२ से १६ घंटे तक काम करवाया जाता है और वहीं कारखाने में २४ घंटे रहने के लिए मजबूर किया जाता है। उन्होंने कहा कि देश में हर घंटे आठ से नौ बच्चो चोरी अथवा गायब होते हैं। देश के सख्यत चौकसी वाले राजधानी दिल्ली में हर दिन आठ नौ बच्चों गायब होते हैं। इन आंकघें से पता चलता है बड़े स्तर पर संगठित द्रुपराध को बढावा दिया जा रहे है। श्री सत्यार्थी ने कहा कि बच् चों के खिलाफ होने वाले अपराधों को रोकने के लिए सरकार को वाबदेही तय करनी होगी। इसके लिए थाना प्रभारी, एसडीएम समेत अन्य अधिकारियों को उनके अधिकार क्षेत्र में होने वाले अपराधों के लिए जिम्मेदार बनाकर सजा का प्रावधान करने होंगे तभी इन इस अपराध पर काबू पाया जाएगा। उन्हों ने कहा कि अशिक्षा, गरीबी और बालश्रम एक दूसरे के पूरक हैं। पूरी दुनिया में १७ करोड़ बाल मजदूर हैं जबकि २१ करोड़ वयस्क बेरोजगार हैं। इन वयस्क बेरोजगारों में ज्यादातर उन १७ करोड़ बच्चों के माता-पिता या बड़े भाई शामिल है। उन्होंने कहा क बेरोजगार वयस्कों को रोजगार मुहैया कराकर कालश्रम को कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश की आवादी का ४१ फीसदी युवा हैं जबकि सकल घरेलू उत्पाद का मात्र चार फीसदी खर्च किया जाता है जो शिक्ष, स्वास्थ्य और संरक्षण पर खर्च होता है। हमारे देश में शिक्षा की गुणवत्ता पर जो देना होगा इसके लिए बजट में राशि को बघने जरूरत है। शिक्षा गुणवत्तापरक होगी तब लोगों को गरीबी से भी निजात मिलेगी। इस प्रकार अशिक्षा, गरीबी और बालश्रम जैसे दुचक्र के बीच गरहा संबंध है। श्री सत्यार्थी ने माना कि बालश्रम जैसे अभिशाप से निपटने के लिए सामाजिक आंदोलन और नतिक दबाव की जरूरत है। इसके साथ ही लाभ हानि से उपर उठकर राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

కార్యశూర లేర !
ఆర్యవీర !

నైజాము విమోచనము

సీ.ప॥ ఆర్య సత్యాగ్రహం కార్య
శూరులజేయ
అందరేకంబవ్వ అదరి పోయె
నైజాము పాలనా ! నక్కజిత్తులు
అన్ని
నేటి రోజునయింక ! దాటి పోయె
ఎవరికొంచని తల-వల్లబాయికి
వంచె
వందనంబులు జేసె ! సుందరముగ
పండి-ఆర్యుల"దండు" నరేంద్రుడు
యజ్ఞ మాగ్నిగ మార్చి-ప్రజ్ఞ చేత !
ఉద్యమానొనరించె ఊరూర ఆర్యుల
పోరాట యోధుల - పొందుపరచి
జగదీష్ఠ్రా గండయ్య -జయము
నారాయణ్‌ప-
వారుల పవరైన ! వారు నిజము
నైజాము స్టేవీలో - నాజైన్ని
గమనించి
కండ్లు తెరువుడింక "కల్వకుంట్ల"
ఓట్ల కొరకు మీరు సీట్లకొరకు మీరు
నిజము పాతరవేయ అజము (జీర్ణ)
కాదు
ఆ.వె.॥ సత్యమొదలి పెట్టసత్యము
వెంటనే
సాగిపోవుచుండె సదరు మనిషి
ధర్మ మిటుల నుండ ధరణి జనుల
గాంచ
కార్య శూర లేర ! ఆర్య వీర !
జయము నొందిరింక
జయకేతనంబెత్త
ఆర్య వీరులంత ! ఆద్యులైరి !
నాటిచరిత గాంచి ! నేటికి మేల్గాంచి
కార్య శూర లేర ! ఆర్య వీర !
విశ్వజనులకెల్ల విజ్ఞాన ధాతమై
కులము మతము లంట కృళ్లి నట్టి
భారతాన్ని నీవ భద్ర పరచలెమ్ము
కార్యశూర లేర ! ఆర్యవీర !

- ఇందిరాల రంగాచార్య
దిల్‌సుఖ్‌నగర్, 9553577706

www.thearyasamaj.org

No. 405042/2016 Reminder -2 Dt. 22-10-2016

Election Notification of
Arya Prathinidhi Sabha, A.P., Hyderabad, Telangana
(Sabha represents both States A.P. and Telangana)
Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)
Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद, तेलंगाना के चुनाव दिनांक ५ फरवरी २०१७ की अधिसूचना

दिनांक २ अक्तूबर २०१६ तथा दिनांक २० अक्तूबर २०१६ के दिनों में आहूत आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद, तेलंगाना की अंतरंग सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. के चुनाव दिनांक **५ फरवरी** २०१७ रविवार के दिन सम्पन्न करवाएं जाएं । आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद, तेलंगाना के चुनाव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के देख रेख में करवाए जाएंगे ।

सभा की अंतरंग बैठकों में तथा सार्वदेशिक सभा की अंतरंग बैठक में लिए गए निर्णयानुसार वर्ष २००१ में संयुक्त आन्ध्र प्रदेश प्रान्त की जो समाजें आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. से सम्बन्धित रहीं है उन्हीं आर्य समाजों से प्रतिनिधि आवेदन पत्र लिए जाएंगे । आर्य समाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी-अपनी समाजों के चुनाव नवम्बर के अंत तक सम्पन्न करवा कर (समस्यात्मक आर्य समाजों के चुनाव सभा तत्वावधान में होंगे) १७ दिसम्बर २०१६ तक प्रतिनिधि आवेदन पत्रों को सभा के कार्यालय में नियमों का पालन करते हुए जमा करवाएं । समाजें निम्नलिखित अंशों को पूरा कर सभा में निर्धारित तिथि के अंदर प्रतिनिधि आवेदन-पत्र जमा करा दें । १७ दिसम्बर २०१६ तक प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों को १८ दिसम्बर २०१६ रविवार के दिन आहूत किए जाने वाले अंतरंग अधिवेशन में स्वीकृति के लिए रखा जाएगा । अंतरंग अधिवेशन में स्वीकृति के बाद २५ दिसम्बर को आहूत की जाने वाली सभा की साधारण सभा में भी स्वीकृति ली जाएगी । स्वीकृति प्राप्त संबंधित प्रतिनिधियों को चुनाव में भाग लेने के लिए सूचना दी जाएगी ।

१. नामांकन पत्र दाखिल करने की तिथि	**२९ जनवरी २०१७**
२. नामांकन पत्र जांच करने की तिथि	**३० जनवरी २०१७**
३. नामांकन पत्र वापस लेने की तिथि	**३१ जनवरी २०१७**
४. चुनाव	**०५ फरवरी २०१७**

इस पत्र के साथ प्रतिनिधि नमुना फॉर्म संलग्न हैं, जिसे आर्य जीवन में भी प्रकाशित किया जाएगा, की पूर्ति कर अधिकारियों के हस्ताक्षर सहित समाज का **Stamp** लगाकर सभा में आवश्यक शुल्क के साथ दाखिल करें ।

१) आर्य समाज का विवरण
२) समाज का प्रतिज्ञा पत्र
३) समाज के साधारण अधिवेशन में प्रतिनिधियों के निर्वाचन संबंधी पत्र के साथ प्रतिनिधि आवेदन पत्र
४) प्रतिनिधियों का प्रतिज्ञापत्र
५) समाज के अधिकारियों द्वारा सभा को दिया जाने वाला शपथ पत्र
६) आर्य समाज के सभासदों की सूची
७) दशांश व अन्य शुल्क निम्न लिखित रूप से जमा करवायें।
८) सभासदों के वार्षिक चंदा का दशांश (तीन वर्षों का)
(वार्षिक चन्दा प्रति सभासद रुपये २५० रहेगा, इससे कम वालों को स्वीकृति नहीं दी जाएगी ।

ब) प्रवेश शुल्क हर प्रतिनिधि पर २५ रुपए ।
क) प्रतिनिधि शुल्क हर प्रतिनिधि पर २५ रुपए ।
ड) आंदोलन शुल्क हर समाज की ओर से ३०० रुपए ।
ख) समाज को सम्पत्ति से तथा अन्य स्रोतों से अगर आय हो, तो उस आय का **२ प्रतिशत प्रतिवर्ष या कुल आय का प्रति तीन वर्ष में केवल एक बार ही सभा के चुनाव के समय रु.५०००/-मात्र (रुपए पाँच हज़ार), दोनों में जो कम हो, देय होगा ।**

आर्य समाजें सभी औपचारिकताओं को पूरा कर निम्नलिखित ढंग से निर्वाचित प्रतिनिधि भेज सकते हैं ।

१) प्रथम ९ सभासदों पर १ प्रतिनिधि पश्चात हर २० सभासदों पर एक प्रतिनिधि अर्थात्
२) २९ सभासदों पर २ प्रतिनिधि
३) ४९ सभासदों पर ३ प्रतिनिधि
४) ६९ सभासदों पर ४ प्रतिनिधि
५) ८९ सभासदों पर ५ प्रतिनिधि ।पाँच से अधिक प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं किये जाएंगे ।

www.thearyasamaj.org

No. 405042/2016 | Reminder -2 | Dt. 22-10-2016

Election Notification of
Arya Prathinidhi Sabha, A.P., Hyderabad, Telangana

(Sabha represents both States A.P. and Telangana)

Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)

Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

ఆర్యప్రతినిధిసభ ఆంధ్రప్రదేశ్-తెలంగాణ ఎన్నికల నొటిఫికేషన్ - ఎన్నికల తేది : 5-2-2017

తేది 2వ అక్టోబర్ మరియు 20వ అక్టోబర్ 2016 రోజులలో నిర్వహించబడిన ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అంతరంగ సమావేశాలలో ఆర్యప్రతినిధి సభ యొక్క ఎన్నికలు 5వ ఫిబ్రవరి 2017 ఆదివారము నాడు నిర్వహించుటకు నిర్ణయించనైనది. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ యొక్క ఎన్నికలు సార్వదేశిక్ ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూఢిల్లీ వారి సమక్షములో వారి ఆధ్వర్యములో నిర్వహించబడును.

ఆర్యప్రతినిధి సభ మరియు సార్వదేశిక్ ఆర్యప్రతినిధి సభ యొక్క అంతరంగ సమావేశాలలో నిర్ణయించిన ప్రకారము 2001లో సంయుక్త ఆంధ్రప్రదేశ్ ప్రాంతమునకు సంబంధించిన (ఆంధ్రప్రదేశ్ మరియు తెలంగాణ రాష్ట్రాలు) ఏ ఆర్య సమాజాలు ఆర్యప్రతినిధి సభతో అనుబంధితంయై ఉన్నవో ఆ-ఆ ఆర్యసమాజాలకు ప్రతినిధులను పంపుటకు అధికారము ఉన్నది. ఆర్య సమాజముల అధికారులతో విజ్ఞప్తి ఏమనగా తమ-తమ ఆర్య సమాజముల యొక్క ఎన్నికలను (సమస్యాత్మక ఆర్య సమాజముల యొక్క ఎన్నికలు సభ నిర్వహించును) నవంబర్ చివరి వరకు పూర్తి చేసుకొని 17వ డిసెంబర్ 2016 నాటి వరకు మీ సమాజము నుండి ప్రతినిధి సభకు పంపవలసిన ప్రతినిధుల యొక్క ఫారాలను నియామాలు అన్నింటిని పాటిస్తు సభాకార్యాలయములో దాఖలు చేయవలెను. 17 డిసెంబరు 2016 వరకు కార్యాలయములో దాఖలు అయిన ప్రతినిధుల ఫారాలను 18 డిసెంబర్ 2016 ఆదివారము నాడు నిర్వహించబడే అంతరంగ సమావేశములో స్వీకృతికై పెట్టడం జరుగును. అంతరంగ సమావేశములో స్వీకరించబడిన ప్రతినిధుల యొక్క జాబితాను 25 డిసెంబరు 2016 నాడు నిర్వహించబడే సర్వసభ్య సమావేశములో పునః స్వీకృతికై పెట్టడము జరుగును. కావున నిర్లక్ష్యము చేయకుండా మీ సమాజముల ఎన్నికల సందర్భములో, ప్రతినిధి సభకొరకై ఎన్నుకోబడిన ప్రతినిధి ఫారాలను సభ యొక్క నియమ నిబంధనాలను పాటిస్తూ 17 డిసెంబరు 2016 వరకు దాఖలు చేయగలరు.

ఎన్నికల కార్యక్రమము

1.	నామినేషన్ పత్రాలు దాఖలు చేసే	తేది 29 జనవరి 2017.
2.	నామినేషన్ పత్రాల పరిశీలన	తేది 30 జనవరి 2017.
3.	నామినేషన్ పత్రాలను వాపసు తీసుకునే	తేది 31 జనవరి 2017.
4.	ఎన్నికలు	తేది 5వ ఫిబ్రవరి 2017.

కింది వివరములతో ప్రతినిధి ఫారాలను సమాజము యొక్క ముద్ర వేసి దాఖలు చేయవలెను.

1. సమాజము యొక్క వివరణ.
2. సమాజయము యొక్క ప్రతిజ్ఞ పత్రము.
3. సమాజ యొక్క సర్వసభ్య సమావేశములో ప్రతినిధులు ఎన్నుకోబడిన పత్రము.
4. ప్రతినిధి యొక్క ప్రార్థన పత్రము.
5. ప్రతినిధి యొక్క ప్రతిజ్ఞ పత్రము.
6. ఆర్యప్రతినిధి సభకు సమాజము వైపున ఇవ్వవలసిన ప్రతిజ్ఞ పత్రము (affidavit)
7. ఆర్య సమాజము యొక్క సభాసదుల పట్టిక.
8. ఇవ్వపలసిన దశాంశము మరియు ఇతర శుల్కము.
   - అ) సభాసదుల వార్షిక సభ్యత్వ రుసుముపై 10% (3 సం॥ల కాలమునకు సంబంధించినది మరియు ప్రతి సభ్యుడి సభ్యత్వ రుసుము రూ॥ 250/- ప్రతి సంవత్సరము ఉండును)
   - ఆ) ప్రతి ఒక్క ప్రతినిధి ఒక్క ప్రవేశ శుల్కము — రూ॥ 25/- ప్రతి సంవత్సరము.
   - ఇ) ప్రతి ఒక్క ప్రతినిధి యొక్క ప్రతినిధి శుల్కము — రూ॥ 25/- ప్రతి సంవత్సరము.
   - ఈ) సమాజము నుండి మూడు సంవత్సరములకు గాను ఆందోళన శుల్కము — రూ॥ 300/-.
   - ఎ) సమాజమునకు అచల ఆస్తి నుండి ఆదాయము ఉన్నచో మొత్తము ఆదాయముపై ప్రతి సంవత్సరానికి 2% చొప్పున మొత్తము 3 సంవత్సరం ఆదాయ శుల్కము ఇవ్వవలెను. లేదా మొత్తము మూడు సంవత్సరములకు గాను ఆస్తిపై వచ్చిన ఆదాయమునకు రూ॥ 5,000/- కట్టినచో సరిపోవును. (ఏది తక్కువ ఉంటే దానిని స్వీకరించబడును).
   - ఏ) సమాజము నుండి గరిష్ఠముగా ఐదు ప్రతినిధులను మాత్రమే పంపుటకు అధికారము ఉన్నది.
     1) మొదట 9 సభాసదులపైన ఒక ప్రతినిధిని (తదుపరి సంపూర్ణంగా 20-20 సభాసదులపైన ఒక్కొక్కరిని ఎన్నిక చేసి పంపించవచ్చును అనగా
     (2) 29 సభాసదులపై రెండు ప్రతినిధులను,
     (3) 49 సభాసదులపై మూడు ప్రతినిధులను.
     (4) 69 సభాసదులపై నాలుగు ప్రతినిధులను.
     (5) 89 సభాసదులపై ఐదు ప్రతినిధులను పంపించ వచ్చును లెక్క వివరణ ఇదే పత్రికలో చివరి పేజీలో ఇవ్వనైనది.

హరికిషన్ వేదాలంకార్
మంత్రి

భవదీయ

విఠల్‌రావు ఆర్య
ప్రధాన్

ఆర్యప్రతినిధిసభ ఆంధ్రప్రదేశ్-తెలంగాణ

www.thearyasamaj.org

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का काले धन पर प्रहार और हमारा देश

काले धन के खिलाफ़ साहसिक कदम उठाने के लिए प्रधानमंत्री मोदीजी को बहुत-बहुत बधाई

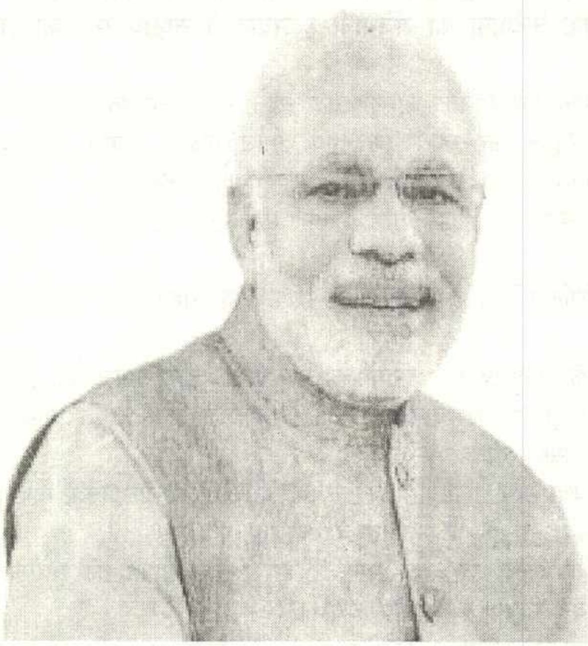

८ नवम्बर, २०१६ की रात्रि ८.०० बजे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक टीवी प्रसारण कर सरकार के एक हजार और पांच सौ के नोटों के प्रचलन पर सरकारी रोक की जानकारी देशवासियों को दी। स्वामी रामदेव जी ने अनेक वर्षों से बड़ी करेंसी के नोटों के प्रचलन पर रोक लगाने के समर्थन में आन्दोलन किया था तथा अपनी मांग को देश हित सहित कालाधन समाप्त करने में सर्वाधिक सहयोगी सिद्ध किया था। हमें लगता है कि मोदी जी ने कालेधन की समाप्ती हेतु एक हजार तथा पांच सौ के नोटों के प्रचलन पर रोक का निर्णय पर्याप्त सोच विचार कर लिया है। सरकार के कालेधन पर निर्णय से आतंकवादियों, नक्सलवादियों, माओवादियों, अलगाववादियों, हवाला कारोबारियों, रियल स्टेट, भूमाफियाओं, बड़े सरकारी अधिकारियों व व्यवासियों आदि की कमर तोड़ दी है। सरकार का यह निर्णय देश के मध्यम व निम्न वर्गीय आयकर आदि नियमों का पालन करने वाले देश के नागरिकों के हित में लिया गया निर्णय है जिससे भारत के दूरगामी हितों को लाभ पहुंचेगा। इससे बच्चों की शिक्षा व मकान आदि के भी सस्ते होने की आशा की जा रही है। इस निर्णय से सभी देशभक्त व देश प्रेमी अतीव प्रसन्न हैं और मोदी जी को इस निर्णय के लिए खुले दिल से अपनी शुभकामनायें एवं बधाई दे रहे हैं।

यह एक ऐसा महत्वपूर्ण एवं बड़ा निर्णय था जिसे सभी स्तरों पर गुप्त रखा जाना आवश्यक था। इसी कारण अनेक ऐसे प्रबन्ध जिससे वर्तमान में देशवासियों को नये करेंसी नोट प्राप्त करने में कठिनाईयां आ रहीं है, उनका पूर्णतया निराकरण एवं समाधान नहीं किया जा सका। ७ नवम्बर, २०१६ के बाद से ही देश में सर्वत्र सभी लोगों को सरकार द्वारा निर्धारित सीमा के अनुसार धन निकालने व उसकी व्यवस्था को लेकर युद्धस्तर पर कार्य किये जा रहे है। आरबीआई द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन पहुंचाने के लिए हैलीकाप्टर तक का सहारा लिया जा रहा है। बताया जाता है कि दो लाख के लगभग माइक्रो ए.टी.एम. व मोबाईल ए.टी.एम. भी जनता कि सुविधा के लिए उपलब्ध कराई जा रहे है। सरकार से सम्बन्धित विभागों सहित सभी बैंकों के अधिकारी भी इसमें सर्वाधिक सहयोग कर रहे हैं। बैंक एवं सरकारी बन्धुओं ने अपने शनिवार व रविवार के अवकाश के दिन ही नहीं छोड़े अपितु प्रत्येक दिन दो घंटे अतिरिक्त कार्य कर रात रात भर अपना हिसाब किताब मिलाते हैं। इस प्रकार यह लगभग बारह घंटे काम रहे हैं जिससे कि देशवासियों को कष्ट न हो। हमें यह भी जानकारी मिली है कि इन बैंक कर्मियों व हमारे पुलिस के बन्धुओं को व्यवस्था में लगे होने के कारण भोजन तक करने का समय नहीं मिल रहा है। इस अतिरिक्त कार्यभार के कारण अनेक बैंक कर्मियों को असुविधायें भी हो रही है। अनेक बैंक शाखाओं में पर्याप्त स्टाफ सबकी प्रशंसा की है। हमें ऐसी भी सूचनायें मिली हैं कि अनेक रक्तचाप, सुगर सहित अनेक रोगों से ग्रसित बैंक कर्मियों सहित गर्भवती बैंक महिला कर्मचारी भी रात दिन काम करके मोदी जी की देश हित में जारी मुहिम को अपनी जी-जान से सफल बनाने में काम कर रही हैं। इतना सब कुछ होने पर भी नये नोटों व एटीएम में नई टैक्नोलोजी के स्थापन में समय लगने के कारण अनेक देशवासियों को कष्ट हो रहा है परन्तु वह सभी देश हित को सर्वोपरि मानकर मोदी जी के निर्णय के साथ हैं। देश अपने इस देशवासियों पर, जो कष्ट सहन कर भी एक हजार व पांच सौ के नोटों का प्रचलन बन्द करने के सरकार के निर्णय के साथ है, जितना भी गर्व करे कम है।

मोदी जी के इस निर्णय के कारण पाकिस्तान में छपने वाली फेक करेंसी का प्रचलन सर्वथा समाप्त हो जाने के कारण पाकिस्तान सहित सभी आतंकवादी, अलगाववादी, काश्मीर में सेना पर पत्थरों की वर्षा करने वाले लोग, नक्सलवादी, हवाला कारोबारी व जमीन की खरीद-

www.thearyasamaj.org

उसभं पारं वीरं, महेसिं विजिताविन ।
अनेज नहातकं बुद्धं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ।।
(ऋषभं प्रवरं वीरं, महर्षिं विजितवन्तम् ।
(अनेजं स्नातकं बुद्धं, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ।।)[५]

अर्थात् जो ऋषभ (श्रेष्ठ) प्रवर, वीर, महर्षि, विजेता, पवित्र स्नातक और बुद्ध (ज्ञानी) है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

यहाँ भी महर्षि और स्नातक ये दो विशेषण वेदाध्ययनादि के साथ सम्बन्ध को सूचित करते हैं । 'ऋषिर्दर्शनात् स्तोमान् ददर्शेति' 'ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः' तद् यदेनांस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भूः अभ्यानर्षत् तदृषीणाम् ऋषित्वमिति विज्ञायते । इत्यादि निरुक्तोक्त व्युत्पत्तियों के अनुसार मन्त्रद्रष्टा को ऋषि कहते हैं । **उनमें भी जो महान्** हो वह महर्षि कहलायेगा । स्नातक भी वेदाध्ययन के बिना नहीं हो सकता यह बात सर्वसम्मत है । इन पर आगे कुछ प्रकाश डाला जाएगा ।

महावग्ग अजपाल कथा में ब्राह्मण लक्षण-धम्मपद के उपर्युक्त श्लोकों के अतिरिक्त विनयपिटक महावग्ग अजपाल कथा में निम्न ब्राह्मण लक्षण द्रष्टव्य है । ''बुद्ध भगवान् अजपाल बरगद वृक्ष के नीचे सप्ताह भर मोक्ष का आनन्द लेते हुए एक आसन से बैठे रहे । उस समय कोई अभिमानी ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया । पास आकर, भगवान् के साथ कुशल-क्षेम पूछकर एक ओर खड़ा हो गया । एक ओर खड़े होकर ब्राह्मण ने भगवान् से यों कहा-

कित्तावता नु खो भो गौतम ब्राह्मणो होति कतमे च पन ब्राह्मण कारका धम्माति ।''

अर्थात् हे गौतम ! ब्राह्मण कैसे होता है ! ब्राह्मण बनानेवाले कौन से धर्म हैं । भगवान् ने इस अर्थ को जानकर उसी समय यह उदान कहा-

यो ब्राह्मणो वाहितपाप धम्मो नीहुङ्कु को निक्कसावो यतत्तो ।
वेदन्तगू वुसित ब्रह्मचरियो धम्मेन सो ब्राह्मणो ब्रह्मवादं वदेय्य ।।

श्री राहुल सांकृन्तायन कृत अनुवाद-

जो विप्र वाहित पापमल-अभिमान विनु संयत रहे । वेदान्त-पारग ब्रह्मचारी ब्रह्मवादी धर्म से । सम नहिं कोई जिससा जगत् में सोई ब्राह्मण ब्राह्मण ।(विनय पिटक का अनुवाद पृ० ७६)

श्री वियोगी हरि द्वारा सङ्कलित 'बुद्ध वाणी' में इसका अर्थ निम्न शब्दों में दिया गया है-

ब्राह्मण कौन ? जो निष्पाप है, निर्मल है, निरभिमान है, संयत है, वेदान्त पारङ्गत है, ब्रह्मचारी है, ब्रह्मवादी और धर्म प्राण है, वही ब्राह्मण है ।[६]

ब्राह्मण का उपर्युक्त लक्षण अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है । इससे उन लोगों के मत का पूर्णतया खण्डन हो जाता है जो यह मानते हैं कि महात्मा बुद्ध ने 'ब्राह्मण' शब्द का प्रयोग 'अर्हत्' वा बौद्ध भिक्षु के लिये ही किया और उनके अनुसार ब्राह्मण के लिये वेदाध्ययन आदि की आवश्यकता नहीं । यहाँ उसके लिये वेदान्त पारग, ब्रह्मवादी आदि शब्दों का प्रयोग है ।

जटिल सुत्त

जटिल सुत्त में भी धम्मपद के समान 'यम्हि सच्चं च धम्मो च, सो सुचि सो च ब्राह्मनोति' ये शब्द आये हैं जिनमें बताया गया है कि जिसमें सत्य और धर्म का निवास है वही पवित्र और वही ब्राह्मण है ।

वाहिय सुत्त

वाहिय सुत्त में महात्मा बुद्ध ने कहा है कि-

'यदा च अत्तना वेदि, मुनि सो तेन ब्राह्मणो', अर्थात् जब मुनि आत्मज्ञान को प्राप्त कर लेता है तभी वह ब्राह्मम कहलाता है । इसी प्रकार अन्य स्थानों में सहात्मा बुद्ध के उपदेश हैं जो स्पष्टतया ब्राह्मणादि वर्णों की व्यवस्था को गुण-कर्म-स्वभावानुसार बताते हुए जन्मानुसार माननेवाली वर्णव्यवस्था का युक्ति-युक्त प्रवल खण्डन करते हैं ।

आस्सलायण सुत्त के वचन-मज्झिम निकाय के आस्सलायण सुत्त के इस विषयक वचनों को संक्षेप से उद्धृत करना इस प्रकरण में आवश्यक प्रतीत होता है जिससे महात्मा बुद्ध की युक्ति परम्परा तथा शैली का भी भली-भाँति ज्ञान होगा । हम इसे श्रीदेव मित्र धर्मपाल द्वारा रचित और महाबोधि सभा सारनाथ द्वारा प्रकाशित 'भगवान् बुद्ध की शिक्षा' से उद्धृत करते हैं ।

''एक समय भगवान् श्रावस्ती नगर के जेतवन में विराजते थे । उस समय नाना देशों से आये पाँच सौ ब्राह्मणों ने विचार किया-यह श्रमण गौतम चातुर्वर्णी शुद्धि (चारों वर्णों की शुद्धता) का उपदेश करता है, कौन है जो इसके साथ शास्त्रार्थ कर सकता है । उस समय श्रावस्ती में काव्य व्याकरणादि सहित वेदों में पारङ्गत आश्वलायन नामक ब्राह्मण तरुण वास करता था । उसकी इच्छा न होते हुये भी उन्होंने उसे आग्रह कर बुद्ध के पास शास्त्रार्थ के लिये भेजा ।'' आश्वलायन ने भगवान् के पास जाकर कहा-

हे गौतम ! ब्राह्मण कहते हैं कि ब्राह्मण ही श्रेष्ठ वर्ण है दूसरे छोटे हैं । ब्राह्मण ही शुद्ध हैं, दूसरे नहीं । ब्राह्मण ही ब्रह्मा के औरस पुत्र, ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न, ब्रह्मा के दामाद हैं । इसमें आपकी क्या राय है ? भगवान् ने कहा- 'लेकिन आश्वलायन ! ब्राह्मणों की जननी ब्राह्मणियाँ ऋतुमती गर्भिणी, प्रसूता स्तन-पान कराती देखी जाती हैं । इस प्रकार योनि से उत्पन्न होकर भी ब्राह्मण कहते हैं-ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न, ब्रह्मा के दामाद हैं । क्या तुम ने सुना है कि यवन और कम्बोज तथा दूसरे सीमान्त देशों में आर्य (स्वतन्त्र) और दास (गुलाम) दो ही वर्ण हैं । उसमे भी आर्य से दास हो सकता है, दास से आर्य हो सकता है ।'

आश्वलायन-हाँ, सुना है ।

बुद्ध-तो ब्राह्मणों को यह कहने का क्या अधिकार है कि ब्राह्मण ही श्रेष्ठ वर्ण है । ब्राह्मण हिंसक, दुराचारी, झूँठा, चुगलखोर, कटुभाषी, बकवादी, लोभी, द्वेषी, झूँठी धारणा वाला हो, क्या मरने के बाद वह दुर्गति, नरक में उत्पन्न न होगा ? इसी प्रकार यदि कोई क्षत्रिय.... वैश्य......शूद्र.....?

आश्वलायन-हे गौतम ! सभी चारों वर्ण हिंसक-दुराचारी आदि हों तो नरक में उत्पन्न होंगे ।

www.thearyasamaj.org

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-11-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

हैदराबाद के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी आर्य समाज के कर्मठ नेता

श्री सुखदेव आर्य जी का निधन

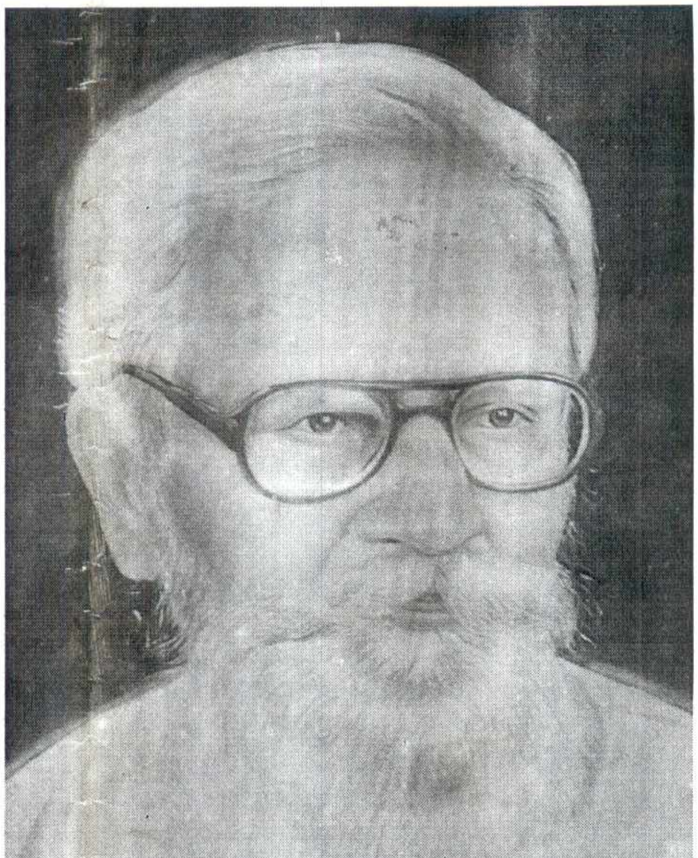

स्व. सुखदेवजी आर्य शाहअलि बण्डा

हैदराबाद के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी आर्य समाज के कर्मठ नेता श्री सुखदेव आर्य जी का निधन २१ अक्तूबर २०१६ के दिन हुआ। पूर्ण वैदिक रीति से २२ अक्तूबर के दिन अन्त्येष्टि की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने ६ नवम्बर के दिन पं. नरेन्द्र भवन में श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर भावभिनि श्रद्धांजलि अर्पित की। सुखदेवजी एक साहसिक नेता थे। रज़ाकारों के हर अत्याचारों का डटकर मुकाबला किया। इनकी एक हुंकार पर हज़ारों के लोग इकट्ठा हुआ करते थे। आखिरी साँस तक आर्य समाज की मान्यताओं का प्रचार प्रसार करते रहे

मध्य में स्व. सुखदेवजी आर्य की धर्मपत्नी

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक: श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.

www.thearyasamaj.org

फरोक्त जिसमें काले धन का अधिकाधिक प्रयोग होता है, का कारोबार पूरी तरह से ध्वस्त व समाप्त होकर रुक गया है जो मोदी जी की इस मुहिम की बहुत बड़ी सफलता है । इन अराष्ट्रीय कार्यों के बन्द होने से लगता है कि सरकार के पास एक हजार व पांच सौ के नोट बन्द करने के अतिरिक्त इन समस्याओं के हल करने का अन्य कोई उपाय था ही नहीं । इससे सभी देशवासी प्रसन्न है । इससे देश व समाज सुदृढ़ हो रहा है वा हुआ है । देश पर इसके दूरगामी अच्छे परिणाम होंगे ।

देश के लिए मोदी जी के कालेधन पर प्रहार से जहां कालेधन वालों को दिन में तारे दिखाई दे रहे हैं वहीं हमारे देश में कुछ नेताओं व प्रभावशाली लोगों को मोदी जी की इस फैसले से लोकप्रियता बढ़ने और उनके काले धन के समाप्त होने से अतीव पीड़ा हो रही है । वह खुल कर स्पष्ट शब्दों में तो अपना दुःख व्यक्त कर पाने में असमर्थ है, अतः वह लोगों की परेशानियों को अपनी ढाल बना कर मोदी जी का अनेक कुतर्को से विरोध कर उन पर आक्रमण कर रहे हैं जो सर्वथा अनुचित है । ईश्वर ऐसे नकारात्मक लोगों से देश की रक्षा करें, यह प्रार्थना है । हमें लगता है कि रामायण और महाभारत युद्ध की भांति व देश के स्वराज्य आन्दोलन की तरह ही यह भी एक प्रकार देश को कालेधन से मुक्त कराने व देश मे सत्य की स्थापना के लिए एक धर्मयुद्ध ही हो रहा है जिसमें निश्चित रूप से सत्य की विजय होनी है । देश की जनता को देश विरोधी छद्म देश हितैषियों के दुष्प्रचार में नहीं फंसना चाहिये और ऐसे लोगों को करारा उत्तर देते हुए प्रधानमंत्री जी को अपना समर्थन व सहयोग देना चाहिये । आज जो स्थिति है वह कल नहीं रहेगी । अगला सप्ताह आते-आते सारी स्थिति सामान्य हो जायेगी, ऐसा अनुमान किया जा सकता है और हमें यह सही लगता है । आगामी एक सप्ताह में सभी एटीएम सामान्य रूप से काम करने लगेंगे । बैंक से निकासी की सीमा भी सरकार ने बढ़ाई है । अब एक व्यक्ति अपने खाते में से चौबीस हजार रुपये प्रति सप्ताह के हिसाब से महीने में लगभग एक लाख रुपया निकाल सकता है । आगे इसमें और वृद्धि की आशा की जा सकती है । यदि बैंक खाताधारी अपना काम चैक व आनलाईन बैंक ट्रांसफर से करें तो कहीं दिक्कत आने की गुजांइश नहीं रहती है । हमें तो सौ या दो सौ की पुस्तक खरीदनी हो, जल, विद्युत, फोन आदि के बिलों का भुगतान करना हो तो हम घर बैठे ही उनका आनलाइन पमेन्ट करते हैं जिससे हमें कहीं आना जाना भी नहीं पड़ता । यदि दुकानदार खुदरा सामान न दें तो शहर व नगरों में रहने वाले लोग समीपवर्ती मौल में जाकर वहां उचित मूल्य पर खरीददारी कर डेबिट व क्रेडिट कार्ड से भुगतान कर भी आवश्यकता की वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं । यह विषय पर बहुत कहा व लिखा जा सकता है । अतः सुविज्ञ पाठ कों के लिए इतना ही पर्याप्त है । देश का यह दुर्भाग्य है कि कुछ समान विचारधारा के लोग अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण प्रधानमंत्री व सरकार का विरोध कर रहे हैं । यह स्थिति अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण एवं निराशाजनक है । हम यहां इतिहास से कोई उदाहरण देने से स्वयं को रोक रहे हैं । हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह विपक्षियों को अकारण देश के प्रधानमंत्री का विरोध न करने के लिए उन्हें सदबुद्दि प्रदान करें जिससे वह असहयोग का मार्ग छोड़ कर सहयोग का मार्ग अपनायें जिससे हमारा देश विश्व की उन्नत अर्थव्यवस्था बनने के साथ यहां न्याय का राज्य रामराज्य स्थापित हो सके । यही महर्षि दयानन्द और गांधी जी का भी स्वप्न था जिससे हमारे राजनीतिक दल कोसों दूर जा चुके हैं ।

-मनमोहन कुमार आर्य

महात्मा बुद्ध एक आर्य सुधारक

-स्वामी धर्मानन्द

अर्थात् मैं ब्राह्मण कुल में उत्पन्न व ब्राह्मणी माता से उत्पन्न को ब्राह्मण नहीं कहता । वह तो अहङ्कारी होता है । जो त्यागी है मैं उसे ब्राह्मण कहता हूँ ।

जो दूसरों की दी हुई गालियों और हिंसा को अदुष्टभाव से सहन करता है क्षमा ही जिसका बल है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ । जो क्रोध रहित है, व्रतधारी है, शील (सदाचार) सम्पन्न है, जितेन्द्रिय और मन को जीतनेवाला है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ । जो जल में कमल की तरह कामों में निर्लेप रहता है मैं उसे ब्राह्मण कहता हूँ । जो गम्भीर बुद्धिवाला, मेधा सम्पन्न, मार्ग-अमार्ग व कर्त्तव्याकर्त्तव्य जानने में निपुण है । जो अत्यन्त उत्तम अवस्था को प्राप्त हुआ है मैं उसको ब्राह्मण कहता हूँ ।

तपेन ब्रह्मचर्येण, संयमेन दमेन च ।
एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमम् ॥६५५॥

अर्थात् तप, ब्रह्मचर्य, (वेद और ईश्वर का ज्ञान) संयम और दम (इन्द्रिय और मन को वश में रखना) इनसे मनुष्य ब्राह्मण बनता है और यही उत्तम ब्राह्मणत्व है ।

धम्मपद के ब्राह्मण वग्ग में महात्मा बुद्ध ने जो उपदेश ब्राह्मण विषयक दिये हैं वे भी इस प्रसङ्ग में द्रष्टव्य हैं । वहाँ उन्होंने कहा है-

''न जटाहि न गोत्तेहि, न जच्चा होति ब्राह्मणो।
यम्हि सच्चं च धम्मो च, सो सुची सो च ब्रहाह्मणो ॥१''
(न जटाभिर्न गोत्रैर्न, जात्या भवति ब्राह्मणः।
यस्मिन् सत्यं च धर्मश्च, स शुचिः स च ब्राह्मणः॥)

अर्थात् न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ब्राह्मण होता है जिसमें सत्य और धर्म है वही शुचि (पवित्र) है और वही ब्राह्मण है ।

अकक्कसं विजापनिं, गिरं सच्चं उदीरये ।
काय नाभिसजे किञ्च, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥[२]
(अकर्कशां विज्ञापनीं, गिरं सत्यामुदीरयेत् ।
यया नाभि षजेत् किंचित्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥)

अर्थात् जो इस प्रकार की अकर्कश, आदर युक्त तथा सच्ची वाणी को बोले कि जिससे कुछ भी पीड़ा न होवे उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

यस्सालया न बिज्जन्ति, अञ्ञाय अकथंकथी।
अमतोगधं अनुप्पत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥
(यस्यालया न विद्यन्ते आज्ञायाकथं कथी ।
अमृतावगाधमनुप्राप्तं[३], तमहं ब्रूमि ब्राह्मणम्॥)[४]

जिसको आलय (तृष्णा) नहीं है, जो भली प्रकार जानकर अकथ पद का कहनेवाला है, जिसने अमृत (परमेश्वर) को प्राप्त कर लिया है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ ।

www.thearyasamaj.org

पत्रांक :- फा. सं. सार्व. आ.प्र. सभा/16/ *दिनांक :- 16-11-2016*

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

दिनांक 2, 3 व 4 फरवरी, 2017

स्थान : हैदराबाद (तेलंगाना)

आमंत्रण-पत्र

आदरणीय.................

सादर नमस्ते !

आपकी सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार-विमर्श करने तथा भावी दिशा निर्धारित करने के लिए **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना** के सौजन्य से आगामी **2 से 4 फरवरी, 2017 तक तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में राष्ट्रीय स्तर का आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन आयोजित** किया जा रहा है ।

यह सम्मेलन आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित किया जा रहा है क्योंकि आर्य समाज तथा उससे बाहर के समस्त प्रबुद्धजन यह अनुभव कर रहे हैं कि आर्य समाज सक्रिय, तेजस्वी और प्रभावशाली कैसे बने ? वर्तमान में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु आर्य समाज की दिशा व दृष्टिकोण क्या हो ? आर्य समाज के छठे नियम में निर्दिष्ट मुख्य उद्देश्य के क्रियान्वयन की क्या योजना बने ? इस तरह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व जवलन्त विषयों पर चिन्तन करने हेतु यह सम्मेलन अति आवश्यक व सामयिक है ।

सम्मेलन में विचारणीय विषय अधोलिखित हैं । इन विषयों पर आप अपने गहन विचारों को संक्षेप में लिखित रूप में अवश्य भेजे दें या साथ लेते आवें ।

१. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान एवं उपायों के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या हो ? वर्तमान में आर्य समाज आम जनता के जीवन को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक विषयों पर क्या कार्यशैली अपनाएं ताकि आम जनता के साथ आर्य समाज सीधा जुड़ सके ।
२. वर्तमान के समस्त प्रचार माध्यनों यथा प्रिन्ट मीडिया (अखबार व पत्रिकाएँ), इलेक्रट्रानिक मीडिया (टी.वी., रेडिया आदि) के द्वारा वेद, दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की योजना क्या हो ?
३. सिद्धान्तों के गहन विषयों पर विशेष शोध एवं शंका समाधान हेतु विद्वत समिति की रूपरेखा ।
४. वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म कैसे बने विषय पर विशेष चर्चा ।
५. आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव, साप्ताहिक सत्संग व अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में उपस्थिति के सम्बन्ध में प्रभावशाली योजना क्या हो ?
६. आर्यों में तथा सामान्य जनता में आध्यात्मिक प्रवृत्ति को बढ़ाने की योजना क्या बने ?
७. बालक, बालिकाओं व युवक-युवतियों को संस्कारित करने तथा आर्य समाज में दीक्षित करने हेतु चरित्र निर्माण शिविरों, वाद-विवाद, भाषण, लेखन आदि प्रतियोगिताओं की योजना एवं अन्य कार्यक्रम क्या हों ?
८. गुरुकुलों के स्नातकों एवं आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं आर्य समाज के कार्यों में उपयोग की योजना ।
९. आर्य समाज की स्थानीय इकाई को जन सामान्य के लिए उपयोगी बनाने तथा इसके माध्यम से ऐसे जनसेवा के कार्य करने जिनसे सामान्य जनता आर्य समाज से जुड़े आदि की योजना ।

सम्मेलन में आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, वरिष्ठ उपदेशकों, गुरुकुलों के वरिष्ठ आचार्यों, वरिष्ठ आर्य भजनोपदेशों, वरिष्ठ आर्य बुद्धिजीवियों तथा वरिष्ठ आर्य नेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है । आप आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तित्व हैं । आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप इसमें अवश्य पधारकर अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं लिखितसुझाव व विचारों से सम्मेलन की सफलता में अपना योगदान प्रदान करें ।

आशा है आप अपनी स्वीकृति से अवगत कराकर कृतार्थ करेंगे ।

निवेदक

(प्रो. विट्ठल राव आर्य)
सभा मंत्री
प्रधान, आ.प्र.सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना मो.:-09849560691

(आचार्य सोमदेव शास्त्री, मुंबई)
संयोजक
मो.:- 09869668130

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान
मो.:- 09013783101